

पूजा-विधानम्

Colophon

This document was typeset using Xe_{La}TeX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several L^AT_EX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of ltranslator 2003 and Ajit Krishnan's mudgala IME (<http://www.aupasana.com/>).

Acknowledgements

The initial encodings of some of these texts were obtained from <http://sanskritdocuments.org/> and/or <http://prapatti.com/>.

See also <http://stotrasamhita.github.io/about/>

स्तोत्रसङ्ग्रहः is also available online (in PDF format) at:
<http://stotrasamhita.github.io/>

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका

| | |
|--|----|
| १ व्रतपूजा: | 1 |
| लघु-पञ्चायतन-पूजा | 2 |
| प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा | 2 |
| षोडशोपचारपूजा | 6 |
| उत्तराङ्गपूजा | 16 |
| एकादशीव्रतम् — श्री महाविष्णुपूजा | 23 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 23 |
| प्रधान पूजा - एकादशीपूजा | 25 |
| षोडशोपचारपूजा | 29 |
| विष्णुसहस्रनामावलि: | 33 |
| उत्तराङ्गपूजा | 57 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा | 63 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 63 |
| प्रधान पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा | 65 |
| षोडशोपचारपूजा | 69 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलि: | 72 |
| उत्तराङ्गपूजा | 75 |
| श्री धन्वन्तरिपूजा | 81 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 81 |
| प्रधान पूजा — धन्वन्तरिपूजा | 83 |

| | |
|---|------------|
| षोडशोपचारपूजा | 87 |
| उत्तराङ्गपूजा | 94 |
| श्री लक्ष्मी-कुबेर-पूजा | 98 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 98 |
| प्रधान पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा | 100 |
| मातृगणपूजा | 104 |
| नवग्रहपूजा | 105 |
| लोकपालपूजा | 111 |
| षोडशोपचारपूजा | 113 |
| उत्तराङ्गपूजा | 119 |
| ईशानादि पूजा | 121 |
| कुबेर पूजा | 121 |
| प्रार्थना | 124 |
| अपराध-क्षमापनम् | 124 |
| श्री तुलसी-पूजा | 125 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 125 |
| प्रधान पूजा — तुलसी-पूजा | 127 |
| षोडशोपचारपूजा | 130 |
| उत्तराङ्गपूजा | 140 |
| बृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु पूजा) | 145 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 145 |
| प्रधान पूजा — तुलसी-पूजा | 147 |
| षोडशोपचारपूजा | 149 |
| अङ्गपूजा | 153 |

| | |
|--|----------------|
| तुलसीविवाहविधिः | 160 |
| शिवरत्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा | 162 |
| व्रत-सङ्कल्पः | 162 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 163 |
| प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (प्रथम-यामः) | 165 |
| षोडशोपचारपूजा | 169 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 172 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 174 |
| प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (द्वितीय-यामः) | 178 |
| षोडशोपचारपूजा | 181 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 184 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 187 |
| प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (तृतीय-यामः) | 190 |
| षोडशोपचारपूजा | 194 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 197 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 199 |
| प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (चतुर्थ-यामः) | 203 |
| षोडशोपचारपूजा | 206 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 209 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 212 |
| २ उपाङ्गाः | 216 |
| संवत्सर-नामानि | 217 |
| नक्षत्र-नामानि | 219 |

विभाग: १

व्रतपूजा:

॥लघु-पञ्चायतन-पूजा॥

॥प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवस्सुवरोम्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे
मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि
षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^१ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने
(ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष /
वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर्
/ मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां
/ द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर
/ भानु) वासरयुक्तायाम् ()^२ नक्षत्र ()^३ नाम योग () करण
युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् () शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थम्

^१पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^२पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^३पृष्ठं २२० पश्यताम्

पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री महागणपति-प्रीत्यर्थं श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-प्रीत्यर्थं श्री लक्ष्मीनारायण-प्रीत्यर्थं श्री महालक्ष्मीसमेतं श्री सन्तानगोपाल-प्रीत्यर्थं श्री गौरीदेवी-प्रीत्यर्थं श्री साम्बपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री नन्दिकेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री वल्लिदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजां पञ्चायतनपूजां क्षीराभिषेकं च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपो-
ऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽष्यापो यजूऽष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः
सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।

आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।

त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद
सादनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महागणपतिं ध्यायामि। आवाहयामि॥
आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन
सविता रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।
अस्मिन् बिम्बे श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं
ध्यायामि। आवाहयामि॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥

हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवाह॥

अस्मिन् बिम्बे श्री लक्ष्मीनारायणं ध्यायामि। अस्मिन् बिम्बे श्री
महालक्ष्मीसमेतं श्री सन्तानगोपालं ध्यायामि।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।

अष्टापदी नवपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री सपरिवार-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि।

आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री गौरीदेवीं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।

अस्मिन् बिम्बे श्री नन्दिकेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिनं

ध्यायामि।

कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणभम्

स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवक्त्रम्।

कात्यायनी-प्रियसुतं कटिबद्धवामम्

कौपीन-दण्डधर-दक्षिणहस्तामीडे ॥

आवाहयामि॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री

सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि।

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

आवाहयामि॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः।

आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

॥अभिषेकः॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
 ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद

सादनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।
तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।
तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

रुद्रप्रश्न-चमकप्रश्न-पुरुषषुक्तैः अभिषेकम् कृत्वा।

अभिषेकानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान्
समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥महागणपति-अर्चना॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

ॐ श्री महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि
समर्पयामि।

॥आदित्य-अर्चना॥

- | | |
|------------------|-----------------------|
| १. ॐ मित्राय नमः | ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः |
| २. ॐ रवये नमः | ८. ॐ मरीचये नमः |
| ३. ॐ सूर्याय नमः | ९. ॐ आदित्याय नमः |
| ४. ॐ भानवे नमः | १०. ॐ सवित्रे नमः |
| ५. ॐ खगाय नमः | ११. ॐ अर्काय नमः |
| ६. ॐ पूष्णे नमः | १२. ॐ भास्कराय नमः |

ॐ श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥लक्ष्मीनारायण-अर्चना॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि
समर्पयामि।

॥महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-अर्चना॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री महालक्ष्मीसमेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥श्री-साम्बपरमेश्वर-अर्चना॥

- | | |
|------------------------|------------------------|
| १. ॐ भवाय देवाय नमः | ५. ॐ रुद्राय देवाय नमः |
| २. ॐ शर्वाय देवाय नमः | ६. ॐ उग्राय देवाय नमः |
| ३. ॐ ईशानाय देवाय नमः | ७. ॐ भीमाय देवाय नमः |
| ४. ॐ पशुपतये देवाय नमः | ८. ॐ महते देवाय नमः |

ॐ श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि
समर्पयामि।

ॐ नन्दिकेश्वराय नमः।

॥गौरी-अर्चना॥

- | |
|----------------------------------|
| १. ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| २. ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ३. ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ४. ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः |
| ५. ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ६. ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ७. ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ८. ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः |

ॐ श्री-गौरी-देव्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-सुब्रह्मण्यस्वामी-अर्चना॥

- | | |
|----------------------------|--------------------|
| १. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः | ३. ॐ अग्निभुवे नमः |
| २. ॐ स्कन्दाय नमः | ४. ॐ बाहुलेयाय नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ५. ॐ गाङ्गेयाय नमः | ११. ॐ शक्तिधराय नमः |
| ६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः | १२. ॐ गुहाय नमः |
| ७. ॐ कार्तिकेयाय नमः | १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः |
| ८. ॐ कुमाराय नमः | १४. ॐ षण्मातुराय नमः |
| ९. ॐ षण्मुखाय नमः | १५. ॐ क्रौञ्चभित्रे नमः |
| १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः | १६. ॐ शिखिवाहनाय नमः |
- ॐ श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥श्री-राम-अर्चना॥

- | | |
|-----------------------|---------------------------|
| १. ॐ श्रीरामाय नमः | १३. ॐ परमात्मने नमः |
| २. ॐ रामभद्राय नमः | १४. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः |
| ३. ॐ रामचन्द्राय नमः | १५. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय |
| ४. ॐ शाश्वताय नमः | १६. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः |
| ५. ॐ राजीवलोचनाय नमः | १७. ॐ परस्मै धाम्ने नमः |
| ६. ॐ श्रीमते नमः | १८. ॐ पराकाशाय नमः |
| ७. ॐ राजेन्द्राय नमः | १९. ॐ परात्पराय नमः |
| ८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः | २०. ॐ परेशाय नमः |
| ९. ॐ जानकीवल्लभाय नमः | २१. ॐ पारगाय नमः |
| १०. ॐ जैत्राय नमः | २२. ॐ पाराय नमः |
| ११. ॐ जितामित्राय नमः | २३. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः |
| १२. ॐ जनार्दनाय नमः | २४. ॐ पराय नमः |

॥ श्री-सीता-अर्चना ॥

- | | |
|-----------------------|----------------------------|
| १. ॐ श्रीसीतायै नमः | ७. ॐ अवनिसुतायै नमः |
| २. ॐ जानक्यै नमः | ८. ॐ रामायै नमः |
| ३. ॐ देव्यै नमः | ९. ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै |
| ४. ॐ वैदेह्यै नमः | १०. ॐ रत्नगुप्तायै नमः |
| ५. ॐ राघवप्रियायै नमः | ११. ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः |
| ६. ॐ रमायै नमः | १२. ॐ मैथिल्यै नमः |

॥ श्री-हनूमद्-अर्चना ॥

१. ॐ हनुमते नमः
२. ॐ अञ्जनासूनवे नमः
३. ॐ वायुपुत्राय नमः
४. ॐ महाबलाय नमः
५. ॐ कपीन्द्राय नमः
६. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
७. ॐ लङ्काद्वीपभयङ्कराय नमः
८. ॐ प्रभञ्जनसुताय नमः
९. ॐ वीराय नमः
१०. ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः
११. ॐ अक्षहन्त्रे नमः
१२. ॐ रामसखाय नमः
१३. ॐ रामकार्यधुरन्धराय नमः

१४. ॐ महौषधगिरेर्धारिणे नमः
१५. ॐ वानरप्राणदायकाय नमः
१६. ॐ वारीशतारकाय नमः
१७. ॐ मैनाकगिरिभञ्जनाय नमः
१८. ॐ निरञ्जनाय नमः
१९. ॐ जितक्रोधाय नमः
२०. ॐ कदलीवनसंवृताय नमः
२१. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
२२. ॐ महासत्त्वाय नमः
२३. ॐ सर्वमन्त्रप्रवर्तकाय नमः
२४. ॐ महालिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
२५. ॐ बाष्पकृत् जपतान्तराय नमः
२६. ॐ नित्यं शिवध्यानपराय नमः
२७. ॐ शिवपूजापरायणाय नमः

ॐ श्री

सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे
नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥उत्तराङ्गपूजा॥

धूपमाघ्रापयामि।

पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तम्।
पञ्चहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

पञ्चहारतीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

गायत्रीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

प॒शूँश्च॒ मह्य॑माव॒ह जी॒र्वनं॑ च दि॒शो दि॒श॥

मा नो॑ हि॒सी॒ज्जात॑वेदो गाम॒श्वं पु॒रुषं॑ जग॒त्।

अ॒बिभ्र॑द॒ग्न आ॒ग॑हि॒ श्रिया॑ मा॒ परि॑पातय॥

ए॒क॒हा॒रती॑दीपं दर्शयामि।

दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं कृत्वा।

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-

श्री सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः

श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नन्दिकेश्वराय नमः

श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः

श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र

परब्रह्मणे नमः () महानैवेद्यं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।

निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते। यो राजा सत्राज्यो वा सोमेन
यजते। देवसुवामेतानि हवींषि भवन्ति। एतावन्तो वै देवानां
सुवाः। त एवास्मै सुवान्प्रयच्छन्ति। त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय।
देवसू राजा भवति॥

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति
कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं
विभाति॥

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-
श्री सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः
श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः
श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नन्दिकेश्वराय नमः
श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र
परब्रह्मणे नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ॐ तद्वायुः। ॐ तदात्मा।

ओं तथ्सत्यम्। ओं तथ्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९

रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्तै च प्रतिष्ठितः।

तस्य प्रकृतिर्लीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं
समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमः शिवाय साम्बाय सगणाय ससूनवे।

सनन्दिने सगङ्गाय सवृषाय नमो नमः॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम्

परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।

नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्

नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥

॥नमस्कारमन्त्राः॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय
हिरण्यपतयेऽम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।

पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।

सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे।

वो चेम शन्तमं हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कारान् कृत्वा।

छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त-राजोपचारान् समर्पयामि।

बाण-रावण-चण्डेश-नन्दि-भृङ्गि-रिटादयः।

महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥

नन्दिकेश्वराय नमः बलिं निवेदयामि। ॐ हरा। ॐ हरा। ॐ हरा।

शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं शङ्करोपरि।

अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥

शङ्खजलेन प्रोक्ष्य।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभम्॥

इति अभिषेकतीर्थं प्राश्य।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाऽऽराधनं मम॥

हृद्वन्नकर्णिका-मध्यमुमया सह शङ्कर।
प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावरणैः सह॥

सम्पूजकानां परिपालकानां
यतेन्द्रियानां च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञाम्
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥

अनया पूजया सपरिवार-साम्ब-परमेश्वरः प्रीयताम्।

॥उद्धासनम्॥

निर्याणमुद्रया पुष्पाण्यादाय आघ्राय हृदये स्थापयित्वा उद्धासयेत्।
निर्माल्यं शिरसि धारयेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

आचामेत्।



॥एकादशीव्रतम् — श्री महाविष्णुपूजा॥

॥पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा - एकादशीपूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे
मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि
षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^४ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने
(ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ
(मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह / कन्या / तुला
/ वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल /
कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु / भौम
/ बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^५
नक्षत्र ()^६ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण

^४पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^५पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^६पृष्ठं २२० पश्यताम्

विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ
 अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
 पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि
 पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
 पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां
 सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं
 श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि
 षोडशोपचारपूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
 सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै

नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव आपो-
ऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः
सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥आत्मपूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेत् चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्।
लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदत्रैनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाःश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मक्रामत्। साशनानशने अभि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

सप्तास्यऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः।
गार्वो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥अङ्गपूजा॥

१. ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि
२. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि
४. विश्वरूपाय नमः — जङ्घे पूजयामि
५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि
६. भोक्त्रे नमः — कटिं पूजयामि
७. विष्णवे नमः — मेढ्रं पूजयामि
८. हिरण्यगर्भाय नमः — नाभिं पूजयामि
९. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि
१०. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि
११. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि
१२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि
१३. सर्वात्मने नमः — मुखं पूजयामि
१४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि
१५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि

१६. चम्पकनासिकाय नमः— नासिकां पूजयामि
 १७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
 १८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि
 १९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि
 २०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥चतुर्विंशति नामपूजा॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥विष्णुसहस्रनामावलि:॥

ॐ विश्वस्मै नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वषट्काराय नमः
 ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
 ॐ भूतकृते नमः
 ॐ भूतभृते नमः
 ॐ भावाय नमः
 ॐ भूतात्मने नमः
 ॐ भूतभावनाय नमः
 ॐ पूतात्मने नमः १०
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ मुक्तानां परमायै गतये
 नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ पुरुषाय नमः
 ॐ साक्षिणे नमः
 ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
 ॐ अक्षराय नमः
 ॐ योगाय नमः
 ॐ योगविदां नेत्रे नमः
 ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः २०

ॐ नारसिंहवपुषे नमः
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ केशवाय नमः
 ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ सर्वस्मै नमः
 ॐ शर्वाय नमः
 ॐ शिवाय नमः
 ॐ स्थाणवे नमः
 ॐ भूतादये नमः
 ॐ निधयेऽव्ययाय नमः ३०
 ॐ सम्भवाय नमः
 ॐ भावनाय नमः
 ॐ भर्त्रे नमः
 ॐ प्रभवाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ ईश्वराय नमः
 ॐ स्वयम्भुवे नमः
 ॐ शम्भवे नमः
 ॐ आदित्याय नमः
 ॐ पुष्कराक्षाय नमः ४०
 ॐ महास्वनाय नमः

ॐ अनादिनिधनाय नमः
 ॐ धात्रे नमः
 ॐ विधात्रे नमः
 ॐ धातव उत्तमाय नमः
 ॐ अप्रमेयाय नमः
 ॐ हृषीकेशाय नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ अमरप्रभवे नमः
 ॐ विश्वकर्मणे नमः ५०
 ॐ मनवे नमः
 ॐ त्वष्ट्रे नमः
 ॐ स्थविष्ठाय नमः
 ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः
 ॐ अग्राह्याय नमः
 ॐ शाश्वताय नमः
 ॐ कृष्णाय नमः
 ॐ लोहिताक्षाय नमः
 ॐ प्रतर्दनाय नमः
 ॐ प्रभूताय नमः ६०
 ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः
 ॐ पवित्राय नमः
 ॐ मङ्गलाय परस्मै नमः
 ॐ ईशानाय नमः

ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ प्राणाय नमः
 ॐ ज्येष्ठाय नमः
 ॐ श्रेष्ठाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ७०
 ॐ भूगर्भाय नमः
 ॐ माधवाय नमः
 ॐ मधुसूदनाय नमः
 ॐ ईश्वराय नमः
 ॐ विक्रमिणे नमः
 ॐ धन्विने नमः
 ॐ मेधाविने नमः
 ॐ विक्रमाय नमः
 ॐ क्रमाय नमः
 ॐ अनुत्तमाय नमः ८०
 ॐ दुराधर्षाय नमः
 ॐ कृतज्ञाय नमः
 ॐ कृतये नमः
 ॐ आत्मवते नमः
 ॐ सुरेशाय नमः
 ॐ शरणाय नमः
 ॐ शर्मणे नमः

ॐ विश्वरेतसे नमः
 ॐ प्रजाभवाय नमः
 ॐ अहे नमः १०
 ॐ संवत्सराय नमः
 ॐ व्यालाय नमः
 ॐ प्रत्ययाय नमः
 ॐ सर्वदर्शनाय नमः
 ॐ अजाय नमः
 ॐ सर्वेश्वराय नमः
 ॐ सिद्धाय नमः
 ॐ सिद्धये नमः
 ॐ सर्वादये नमः
 ॐ अच्युताय नमः १००
 ॐ वृषाकपये नमः
 ॐ अमेयात्मने नमः
 ॐ सर्वयोगविनिस्सृताय नमः
 ॐ वसवे नमः
 ॐ वसुमनसे नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ समात्मने नमः
 ॐ असम्मिताय नमः
 ॐ समाय नमः
 ॐ अमोघाय नमः ११०

ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः
 ॐ वृषकर्मणे नमः
 ॐ वृषाकृतये नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ बहुशिरसे नमः
 ॐ बभ्रवे नमः
 ॐ विश्वयोनये नमः
 ॐ शुचिश्रवसे नमः
 ॐ अमृताय नमः
 ॐ शाश्वतस्स्थाणवे नमः १२०
 ॐ वरारोहाय नमः
 ॐ महातपसे नमः
 ॐ सर्वगाय नमः
 ॐ सर्वविद्वानवे नमः
 ॐ विष्वक्सेनाय नमः
 ॐ जनार्दनाय नमः
 ॐ वेदाय नमः
 ॐ वेदविदे नमः
 ॐ अव्यङ्गाय नमः
 ॐ वेदाङ्गाय नमः १३०
 ॐ वेदविदे नमः
 ॐ कवये नमः
 ॐ लोकाध्यक्षाय नमः

ॐ सुराध्यक्षाय नमः
 ॐ धर्माध्यक्षाय नमः
 ॐ कृताकृताय नमः
 ॐ चतुरात्मने नमः
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
 ॐ चतुर्दंष्ट्राय नमः
 ॐ चतुर्भुजाय नमः १४०
 ॐ भ्राजिष्णवे नमः
 ॐ भोजनाय नमः
 ॐ भोक्त्रे नमः
 ॐ सहिष्णवे नमः
 ॐ जगदादिजाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ विजयाय नमः
 ॐ जेत्रे नमः
 ॐ विश्वयोनये नमः
 ॐ पुनर्वसवे नमः १५०
 ॐ उपेन्द्राय नमः
 ॐ वामनाय नमः
 ॐ प्रांशवे नमः
 ॐ अमोघाय नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ ऊर्जिताय नमः

ॐ अतीन्द्राय नमः
 ॐ सङ्ग्रहाय नमः
 ॐ सर्गाय नमः
 ॐ धृतात्मने नमः १६०
 ॐ नियमाय नमः
 ॐ यमाय नमः
 ॐ वेद्याय नमः
 ॐ वैद्याय नमः
 ॐ सदायोगिने नमः
 ॐ वीरघ्ने नमः
 ॐ माधवाय नमः
 ॐ मधवे नमः
 ॐ अतीन्द्रियाय नमः
 ॐ महामायाय नमः १७०
 ॐ महोत्साहाय नमः
 ॐ महाबलाय नमः
 ॐ महाबुद्धये नमः
 ॐ महावीर्याय नमः
 ॐ महाशक्तये नमः
 ॐ महाद्युतये नमः
 ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ अमेयात्मने नमः

ॐ महाद्रिधृषे नमः १८०
 ॐ महेष्वासाय नमः
 ॐ महीभर्त्रे नमः
 ॐ श्रीनिवासाय नमः
 ॐ सतां गतये नमः
 ॐ अनिरुद्धाय नमः
 ॐ सुरानन्दाय नमः
 ॐ गोविन्दाय नमः
 ॐ गोविदां पतये नमः
 ॐ मरीचये नमः
 ॐ दमनाय नमः १९०
 ॐ हंसाय नमः
 ॐ सुपर्णाय नमः
 ॐ भुजगोत्तमाय नमः
 ॐ हिरण्यनाभाय नमः
 ॐ सुतपसे नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ अमृत्यवे नमः
 ॐ सर्वदृशे नमः
 ॐ सिंहाय नमः २००
 ॐ सन्धात्रे नमः
 ॐ सन्धिमतये नमः

ॐ स्थिराय नमः
 ॐ अजाय नमः
 ॐ दुर्मर्षणाय नमः
 ॐ शास्त्रे नमः
 ॐ विश्रुतात्मने नमः
 ॐ सुरारिघ्ने नमः
 ॐ गुरवे नमः
 ॐ गुरुतमाय नमः २१०
 ॐ धाम्ने नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ सत्यपराक्रमाय नमः
 ॐ निमिषाय नमः
 ॐ अनिमिषाय नमः
 ॐ स्रग्विणे नमः
 ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः
 ॐ अग्रण्ये नमः
 ॐ ग्रामण्ये नमः
 ॐ श्रीमते नमः २२०
 ॐ न्यायाय नमः
 ॐ नेत्रे नमः
 ॐ समीरणाय नमः
 ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः
 ॐ विश्वात्मने नमः

ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ सहस्रपदे नमः
 ॐ आवर्तनाय नमः
 ॐ निवृत्तात्मने नमः
 ॐ संवृताय नमः २३०
 ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः
 ॐ अहःसंवर्तकाय नमः
 ॐ वह्नये नमः
 ॐ अनिलाय नमः
 ॐ धरणीधराय नमः
 ॐ सुप्रसादाय नमः
 ॐ प्रसन्नात्मने नमः
 ॐ विश्वधृषे नमः
 ॐ विश्वभुजे नमः
 ॐ विभवे नमः २४०
 ॐ सत्कर्त्रे नमः
 ॐ सत्कृताय नमः
 ॐ साधवे नमः
 ॐ जह्वे नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ नराय नमः
 ॐ असङ्ख्येयाय नमः
 ॐ अप्रमेयात्मने नमः

ॐ विशिष्टाय नमः
 ॐ शिष्टकृते नमः २५०
 ॐ शुचये नमः
 ॐ सिद्धार्थाय नमः
 ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सिद्धिदाय नमः
 ॐ सिद्धिसाधनाय नमः
 ॐ वृषाहिणे नमः
 ॐ वृषभाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वृषपर्वणे नमः
 ॐ वृषोदराय नमः २६०
 ॐ वर्धनाय नमः
 ॐ वर्धमानाय नमः
 ॐ विविक्ताय नमः
 ॐ श्रुतिसागराय नमः
 ॐ सुभुजाय नमः
 ॐ दुर्धराय नमः
 ॐ वाग्मिने नमः
 ॐ महेन्द्राय नमः
 ॐ वसुदाय नमः
 ॐ वसवे नमः २७०
 ॐ नैकरूपाय नमः

ॐ बृहद्रूपाय नमः
 ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॐ प्रकाशनाय नमः
 ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः
 ॐ प्रकाशात्मने नमः
 ॐ प्रतापनाय नमः
 ॐ ऋद्धाय नमः
 ॐ स्पष्टाक्षराय नमः
 ॐ मन्त्राय नमः २८०
 ॐ चन्द्रांशवे नमः
 ॐ भास्करद्युतये नमः
 ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
 ॐ भानवे नमः
 ॐ शशबिन्दवे नमः
 ॐ सुरेश्वराय नमः
 ॐ औषधाय नमः
 ॐ जगत्स्सेतवे नमः
 ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः
 ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः
 २९०
 ॐ पवनाय नमः
 ॐ पावनाय नमः
 ॐ अनलाय नमः

ॐ कामघ्ने नमः
 ॐ कामकृते नमः
 ॐ कान्ताय नमः
 ॐ कामाय नमः
 ॐ कामप्रदाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ युगादिकृते नमः ३००
 ॐ युगावर्ताय नमः
 ॐ नैकमायाय नमः
 ॐ महाशनाय नमः
 ॐ अदृश्याय नमः
 ॐ व्यक्तरूपाय नमः
 ॐ सहस्रजिते नमः
 ॐ अनन्तजिते नमः
 ॐ इष्टाय नमः
 ॐ अविशिष्टाय नमः
 ॐ शिष्टेष्टाय नमः ३१०
 ॐ शिखण्डिने नमः
 ॐ नहुषाय नमः
 ॐ वृषाय नमः
 ॐ क्रोधघ्ने नमः
 ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः
 ॐ विश्वबाह्वे नमः

ॐ महीधराय नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ प्रथिताय नमः
 ॐ प्राणाय नमः ३२०
 ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ वासवानुजाय नमः
 ॐ अपान्निधये नमः
 ॐ अधिष्ठानाय नमः
 ॐ अप्रमत्ताय नमः
 ॐ प्रतिष्ठिताय नमः
 ॐ स्कन्दाय नमः
 ॐ स्कन्दधराय नमः
 ॐ धुर्याय नमः
 ॐ वरदाय नमः ३३०
 ॐ वायुवाहनाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ बृहद्भानवे नमः
 ॐ आदिदेवाय नमः
 ॐ पुरन्दराय नमः
 ॐ अशोकाय नमः
 ॐ तारणाय नमः
 ॐ ताराय नमः
 ॐ शूराय नमः

ॐ शौरये नमः ३४०
 ॐ जनेश्वराय नमः
 ॐ अनुकूलाय नमः
 ॐ शतावर्ताय नमः
 ॐ पद्मिने नमः
 ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ अरविन्दाक्षाय नमः
 ॐ पद्मगर्भाय नमः
 ॐ शरीरभृते नमः
 ॐ महर्द्धये नमः ३५०
 ॐ ऋद्धाय नमः
 ॐ वृद्धात्मने नमः
 ॐ महाक्षाय नमः
 ॐ गरुडध्वजाय नमः
 ॐ अतुलाय नमः
 ॐ शरभाय नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ समयज्ञाय नमः
 ॐ हविर्हरये नमः
 ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः
 ३६०
 ॐ लक्ष्मीवते नमः

ॐ समितिञ्जयाय नमः
 ॐ विक्षराय नमः
 ॐ रोहिताय नमः
 ॐ मार्गाय नमः
 ॐ हेतवे नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ सहाय नमः
 ॐ महीधराय नमः
 ॐ महाभागाय नमः ३७०
 ॐ वेगवते नमः
 ॐ अमिताशनाय नमः
 ॐ उद्धवाय नमः
 ॐ क्षोभणाय नमः
 ॐ देवाय नमः
 ॐ श्रीगर्भाय नमः
 ॐ परमेश्वराय नमः
 ॐ करणाय नमः
 ॐ कारणाय नमः
 ॐ कर्त्रे नमः ३८०
 ॐ विकर्त्रे नमः
 ॐ गहनाय नमः
 ॐ गुहाय नमः
 ॐ व्यवसायाय नमः

ॐ व्यवस्थानाय नमः
 ॐ संस्थानाय नमः
 ॐ स्थानदाय नमः
 ॐ ध्रुवाय नमः
 ॐ परर्द्धये नमः
 ॐ परमस्पष्टाय नमः ३९०
 ॐ तुष्टाय नमः
 ॐ पुष्टाय नमः
 ॐ शुभेक्षणाय नमः
 ॐ रामाय नमः
 ॐ विरामाय नमः
 ॐ विरताय नमः
 ॐ मार्गाय नमः
 ॐ नेयाय नमः
 ॐ नयाय नमः
 ॐ अनयाय नमः ४००
 ॐ वीराय नमः
 ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः
 ॐ धर्माय नमः
 ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः
 ॐ वैकुण्ठाय नमः
 ॐ पुरुषाय नमः
 ॐ प्राणाय नमः

ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ प्रणवाय नमः
 ॐ पृथवे नमः ४१०
 ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
 ॐ शत्रुघ्नाय नमः
 ॐ व्याप्ताय नमः
 ॐ वायवे नमः
 ॐ अधोक्षजाय नमः
 ॐ ऋतवे नमः
 ॐ सुदर्शनाय नमः
 ॐ कालाय नमः
 ॐ परमेष्ठिने नमः
 ॐ परिग्रहाय नमः ४२०
 ॐ उग्राय नमः
 ॐ संवत्सराय नमः
 ॐ दक्षाय नमः
 ॐ विश्रामाय नमः
 ॐ विश्वदक्षिणाय नमः
 ॐ विस्ताराय नमः
 ॐ स्थावरस्थानवे नमः
 ॐ प्रमाणाय नमः
 ॐ बीजायाव्ययाय नमः
 ॐ अर्थाय नमः ४३०

ॐ अनर्थाय नमः
 ॐ महाकोशाय नमः
 ॐ महाभोगाय नमः
 ॐ महाधनाय नमः
 ॐ अनिर्विण्णाय नमः
 ॐ स्थविष्ठाय नमः
 ॐ अभुवे नमः
 ॐ धर्मयूपाय नमः
 ॐ महामखाय नमः
 ॐ नक्षत्रनेमये नमः ४४०
 ॐ नक्षत्रिणे नमः
 ॐ क्षमाय नमः
 ॐ क्षामाय नमः
 ॐ समीहनाय नमः
 ॐ यज्ञाय नमः
 ॐ इज्याय नमः
 ॐ महेज्याय नमः
 ॐ ऋतवे नमः
 ॐ सत्राय नमः
 ॐ सताङ्गतये नमः ४५०
 ॐ सर्वदर्शिने नमः
 ॐ विमुक्तात्मने नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः

ॐ ज्ञानाय उत्तमाय नमः
 ॐ सुव्रताय नमः
 ॐ सुमुखाय नमः
 ॐ सूक्ष्माय नमः
 ॐ सुघोषाय नमः
 ॐ सुखदाय नमः
 ॐ सुहृदे नमः ४६०
 ॐ मनोहराय नमः
 ॐ जितक्रोधाय नमः
 ॐ वीरबाहवे नमः
 ॐ विदारणाय नमः
 ॐ स्वापनाय नमः
 ॐ स्ववशाय नमः
 ॐ व्यापिने नमः
 ॐ नैकात्मने नमः
 ॐ नैककर्मकृते नमः
 ॐ वत्सराय नमः ४७०
 ॐ वत्सलाय नमः
 ॐ वत्सिने नमः
 ॐ रत्नगर्भाय नमः
 ॐ धनेश्वराय नमः
 ॐ धर्मगुपे नमः
 ॐ धर्मकृते नमः

ॐ धर्मिणे नमः
 ॐ सते नमः
 ॐ असते नमः
 ॐ क्षराय नमः ४८०
 ॐ अक्षराय नमः
 ॐ अविज्ञात्रे नमः
 ॐ सहस्रांशवे नमः
 ॐ विधात्रे नमः
 ॐ कृतलक्षणाय नमः
 ॐ गभस्तिनेमये नमः
 ॐ सत्त्वस्थाय नमः
 ॐ सिंहाय नमः
 ॐ भूतमहेश्वराय नमः
 ॐ आदिदेवाय नमः ४९०
 ॐ महादेवाय नमः
 ॐ देवेशाय नमः
 ॐ देवभृद्गुरवे नमः
 ॐ उत्तराय नमः
 ॐ गोपतये नमः
 ॐ गोत्रे नमः
 ॐ ज्ञानगम्याय नमः
 ॐ पुरातनाय नमः
 ॐ शरीरभूतभृते नमः

ॐ भोक्त्रे नमः ५००
 ॐ कपीन्द्राय नमः
 ॐ भूरिदक्षिणाय नमः
 ॐ सोमपाय नमः
 ॐ अमृतपाय नमः
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पुरुजिते नमः
 ॐ पुरुसत्तमाय नमः
 ॐ विनयाय नमः
 ॐ जयाय नमः
 ॐ सत्यसन्धाय नमः ५१०
 ॐ दाशार्हाय नमः
 ॐ सात्त्वतां पतये नमः
 ॐ जीवाय नमः
 ॐ विनयितासाक्षिणे नमः
 ॐ मुकुन्दाय नमः
 ॐ अमितविक्रमाय नमः
 ॐ अम्भोनिधये नमः
 ॐ अनन्तात्मने नमः
 ॐ महोदधिशयाय नमः
 ॐ अन्तकाय नमः ५२०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ महार्हाय नमः

ॐ स्वाभाव्याय नमः
 ॐ जितामित्राय नमः
 ॐ प्रमोदनाय नमः
 ॐ आनन्दाय नमः
 ॐ नन्दनाय नमः
 ॐ नन्दाय नमः
 ॐ सत्यधर्मणे नमः
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः ५३०
 ॐ महर्षये कपिलाचार्याय
 नमः
 ॐ कृतज्ञाय नमः
 ॐ मेदिनीपतये नमः
 ॐ त्रिपदाय नमः
 ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः
 ॐ महाशृङ्गाय नमः
 ॐ कृतान्तकृते नमः
 ॐ महावराहाय नमः
 ॐ गोविन्दाय नमः
 ॐ सुषेणाय नमः ५४०
 ॐ कनकाङ्गदिने नमः
 ॐ गुह्याय नमः
 ॐ गभीराय नमः
 ॐ गहनाय नमः

ॐ गुप्ताय नमः
 ॐ चक्रगदाधराय नमः
 ॐ वेधसे नमः
 ॐ स्वाङ्गाय नमः
 ॐ अजिताय नमः
 ॐ कृष्णाय नमः ५५०
 ॐ दृढाय नमः
 ॐ सङ्कर्षणायाच्युताय नमः
 ॐ वरुणाय नमः
 ॐ वारुणाय नमः
 ॐ वृक्षाय नमः
 ॐ पुष्कराक्षाय नमः
 ॐ महामनसे नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ भगध्रे नमः
 ॐ आनन्दिने नमः ५६०
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ हलायुधाय नमः
 ॐ आदित्याय नमः
 ॐ ज्योतिरादित्याय नमः
 ॐ सहिष्णवे नमः
 ॐ गतिसत्तमाय नमः
 ॐ सुधन्वने नमः

ॐ खण्डपरशवे नमः
 ॐ दारुणाय नमः
 ॐ द्रविणप्रदाय नमः ५७०
 ॐ दिवस्पृशे नमः
 ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः
 ॐ वाचस्पतयेऽयोनिजाय
 नमः
 ॐ त्रिसाम्ने नमः
 ॐ सामगाय नमः
 ॐ साम्ने नमः
 ॐ निर्वाणाय नमः
 ॐ भेषजाय नमः
 ॐ भिषजे नमः
 ॐ सत्र्यासकृते नमः ५८०
 ॐ शमाय नमः
 ॐ शान्ताय नमः
 ॐ निष्टायै नमः
 ॐ शान्त्यै नमः
 ॐ परायणाय नमः
 ॐ शुभाङ्गाय नमः
 ॐ शान्तिदाय नमः
 ॐ स्रष्ट्रे नमः
 ॐ कुमुदाय नमः

ॐ कुवलेशयाय नमः ५९०
 ॐ गोहिताय नमः
 ॐ गोपतये नमः
 ॐ गोप्रे नमः
 ॐ वृषभाक्षाय नमः
 ॐ वृषप्रियाय नमः
 ॐ अनिवर्तिने नमः
 ॐ निवृत्तात्मने नमः
 ॐ सङ्क्षेत्रे नमः
 ॐ क्षेमकृते नमः
 ॐ शिवाय नमः ६००
 ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
 ॐ श्रीवासाय नमः
 ॐ श्रीपतये नमः
 ॐ श्रीमतां वराय नमः
 ॐ श्रीदाय नमः
 ॐ श्रीशाय नमः
 ॐ श्रीनिवासाय नमः
 ॐ श्रीनिधये नमः
 ॐ श्रीविभावनाय नमः
 ॐ श्रीधराय नमः ६१०
 ॐ श्रीकराय नमः
 ॐ श्रेयसे नमः

ॐ श्रीमते नमः
 ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः
 ॐ स्वक्षाय नमः
 ॐ स्वङ्गाय नमः
 ॐ शतानन्दाय नमः
 ॐ नन्दये नमः
 ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
 ॐ विजितात्मने नमः ६२०
 ॐ अविधेयात्मने नमः
 ॐ सत्कीर्तये नमः
 ॐ छिन्नसंशयाय नमः
 ॐ उदीर्णाय नमः
 ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः
 ॐ अनीशाय नमः
 ॐ शाश्वतस्मिथराय नमः
 ॐ भूशयाय नमः
 ॐ भूषणाय नमः
 ॐ भूतये नमः ६३०
 ॐ विशोकाय नमः
 ॐ शोकनाशनाय नमः
 ॐ अर्चिष्मते नमः
 ॐ अर्चिताय नमः
 ॐ कुम्भाय नमः

ॐ विशुद्धात्मने नमः
 ॐ विशोधनाय नमः
 ॐ अनिरुद्धाय नमः
 ॐ अप्रतिरथाय नमः
 ॐ प्रद्युम्नाय नमः ६४०
 ॐ अमितविक्रमाय नमः
 ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः
 ॐ वीराय नमः
 ॐ शौरये नमः
 ॐ शूरजनेश्वराय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ त्रिलोकेशाय नमः
 ॐ केशवाय नमः
 ॐ केशिघ्ने नमः
 ॐ हरये नमः ६५०
 ॐ कामदेवाय नमः
 ॐ कामपालाय नमः
 ॐ कामिने नमः
 ॐ कान्ताय नमः
 ॐ कृतागमाय नमः
 ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वीराय नमः

ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धनञ्जयाय नमः ६६०
 ॐ ब्रह्मण्याय नमः
 ॐ ब्रह्मकृते नमः
 ॐ ब्रह्मणे नमः
 ॐ ब्रह्मणे नमः
 ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः
 ॐ ब्रह्मविदे नमः
 ॐ ब्राह्मणाय नमः
 ॐ ब्रह्मिणे नमः
 ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः
 ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः ६७०
 ॐ महाक्रमाय नमः
 ॐ महाकर्मणे नमः
 ॐ महातेजसे नमः
 ॐ महोरगाय नमः
 ॐ महाक्रतवे नमः
 ॐ महायज्वने नमः
 ॐ महायज्ञाय नमः
 ॐ महाहविषे नमः
 ॐ स्तव्याय नमः
 ॐ स्तवप्रियाय नमः ६८०
 ॐ स्तोत्राय नमः

ॐ स्तुतये नमः
 ॐ स्तोत्रे नमः
 ॐ रणप्रियाय नमः
 ॐ पूर्णाय नमः
 ॐ पूरयित्रे नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ पुण्यकीर्तये नमः
 ॐ अनामयाय नमः
 ॐ मनोजवाय नमः
 ॐ तीर्थकराय नमः
 ॐ वसुरेतसे नमः
 ॐ वसुप्रदाय नमः
 ॐ वसुप्रदाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ वसुवे नमः
 ॐ वसुमनसे नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ सद्गतये नमः
 ॐ सत्कृतये नमः
 ॐ सत्तायै नमः
 ॐ सद्भूतये नमः
 ॐ सत्परायणाय नमः
 ॐ शूरसेनाय नमः

६९०

७००

ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः
 ॐ सन्निवासाय नमः
 ॐ सुयामुनाय नमः
 ॐ भूतावासाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ सर्वासुनिलयाय नमः ७१०
 ॐ अनलाय नमः
 ॐ दर्पघ्ने नमः
 ॐ दर्पदाय नमः
 ॐ दृष्टाय नमः
 ॐ दुर्धराय नमः
 ॐ अपराजिताय नमः
 ॐ विश्वमूर्तये नमः
 ॐ महामूर्तये नमः
 ॐ दीप्तमूर्तये नमः
 ॐ अमूर्तिमते नमः ७२०
 ॐ अनेकमूर्तये नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ शतमूर्तये नमः
 ॐ शताननाय नमः
 ॐ एकस्मै नमः
 ॐ नैकस्मै नमः
 ॐ सवाय नमः

ॐ काय नमः
 ॐ कस्मै नमः
 ॐ यस्मै नमः ७३०
 ॐ तस्मै नमः
 ॐ पदायानुत्तमाय नमः
 ॐ लोकबन्धवे नमः
 ॐ लोकनाथाय नमः
 ॐ माधवाय नमः
 ॐ भक्तवत्सलाय नमः
 ॐ सुवर्णवर्णाय नमः
 ॐ हेमाङ्गाय नमः
 ॐ वराङ्गाय नमः
 ॐ चन्दनाङ्गदिने नमः ७४०
 ॐ वीरघ्ने नमः
 ॐ विषमाय नमः
 ॐ शून्याय नमः
 ॐ घृताशिषे नमः
 ॐ अचलाय नमः
 ॐ चलाय नमः
 ॐ अमानिने नमः
 ॐ मानदाय नमः
 ॐ मान्याय नमः
 ॐ लोकस्वामिने नमः ७५०

ॐ त्रिलोकधृषे नमः
 ॐ सुमेधसे नमः
 ॐ मेधजाय नमः
 ॐ धन्याय नमः
 ॐ सत्यमेधसे नमः
 ॐ धराधराय नमः
 ॐ तेजोवृषाय नमः
 ॐ द्युतिधराय नमः
 ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः
 ॐ प्रग्रहाय नमः ७६०
 ॐ निग्रहाय नमः
 ॐ व्यग्राय नमः
 ॐ नैकशृङ्गाय नमः
 ॐ गदाग्रजाय नमः
 ॐ चतुर्मूर्तये नमः
 ॐ चतुर्बाहवे नमः
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
 ॐ चतुर्गतये नमः
 ॐ चतुरात्मने नमः
 ॐ चतुर्भावाय नमः ७७०
 ॐ चतुर्वेदविदे नमः
 ॐ एकपदे नमः
 ॐ समावर्ताय नमः

ॐ अनिवृत्तात्मने नमः
 ॐ दुर्जयाय नमः
 ॐ दुरतिक्रमाय नमः
 ॐ दुर्लभाय नमः
 ॐ दुर्गमाय नमः
 ॐ दुर्गाय नमः
 ॐ दुरावासाय नमः ७८०
 ॐ दुरारिघ्ने नमः
 ॐ शुभाङ्गाय नमः
 ॐ लोकसारङ्गाय नमः
 ॐ सुतन्त्रवे नमः
 ॐ तन्तुवर्धनाय नमः
 ॐ इन्द्रकर्मणे नमः
 ॐ महाकर्मणे नमः
 ॐ कृतकर्मणे नमः
 ॐ कृतागमाय नमः
 ॐ उद्धवाय नमः ७९०
 ॐ सुन्दराय नमः
 ॐ सुन्दाय नमः
 ॐ रत्ननाभाय नमः
 ॐ सुलोचनाय नमः
 ॐ अर्काय नमः
 ॐ वाजसनाय नमः

ॐ शृङ्गिणे नमः
 ॐ जयन्ताय नमः
 ॐ सर्वविज्जयिने नमः
 ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः ८००
 ॐ अक्षोभ्याय नमः
 ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
 ॐ महाहृदाय नमः
 ॐ महागर्ताय नमः
 ॐ महाभूताय नमः
 ॐ महानिधये नमः
 ॐ कुमुदाय नमः
 ॐ कुन्दराय नमः
 ॐ कुन्दाय नमः
 ॐ पर्जन्याय नमः ८१०
 ॐ पावनाय नमः
 ॐ अनिलाय नमः
 ॐ अमृताशाय नमः
 ॐ अमृतवपुषे नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ सर्वतोमुखाय नमः
 ॐ सुलभाय नमः
 ॐ सुव्रताय नमः
 ॐ सिद्धाय नमः

ॐ शत्रुजिते नमः ८२०
 ॐ शत्रुतापनाय नमः
 ॐ न्यग्रोधाय नमः
 ॐ उदुम्बराय नमः
 ॐ अश्वत्थाय नमः
 ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
 ॐ सहस्रार्चिषे नमः
 ॐ सप्तजिह्वाय नमः
 ॐ सप्तैधसे नमः
 ॐ सप्तवाहनाय नमः
 ॐ अमूर्तये नमः ८३०
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ अचिन्त्याय नमः
 ॐ भयकृते नमः
 ॐ भयनाशनाय नमः
 ॐ अणवे नमः
 ॐ बृहते नमः
 ॐ कृशाय नमः
 ॐ स्थूलाय नमः
 ॐ गुणभृते नमः
 ॐ निर्गुणाय नमः ८४०
 ॐ महते नमः
 ॐ अधृताय नमः

ॐ स्वधृताय नमः
 ॐ स्वास्याय नमः
 ॐ प्राग्वंशाय नमः
 ॐ वंशवर्धनाय नमः
 ॐ भारभृते नमः
 ॐ कथिताय नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ योगीशाय नमः ८५०
 ॐ सर्वकामदाय नमः
 ॐ आश्रमाय नमः
 ॐ श्रमणाय नमः
 ॐ क्षामाय नमः
 ॐ सुपर्णाय नमः
 ॐ वायुवाहनाय नमः
 ॐ धनुर्धराय नमः
 ॐ धनुर्वेदाय नमः
 ॐ दण्डाय नमः
 ॐ दमयित्रे नमः ८६०
 ॐ दमाय नमः
 ॐ अपराजिताय नमः
 ॐ सर्वसहाय नमः
 ॐ नियन्त्रे नमः
 ॐ अनियमाय नमः

ॐ अयमाय नमः
 ॐ सत्त्ववते नमः
 ॐ सात्त्विकाय नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः
 ८७०

ॐ अभिप्रायाय नमः
 ॐ प्रियार्हाय नमः
 ॐ अर्हाय नमः
 ॐ प्रियकृते नमः
 ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
 ॐ विहायसगतये नमः
 ॐ ज्योतिषे नमः
 ॐ सुरुचये नमः
 ॐ हुतभुजे नमः
 ॐ विभवे नमः ८८०
 ॐ रवये नमः
 ॐ विरोचनाय नमः
 ॐ सूर्याय नमः
 ॐ सवित्रे नमः
 ॐ रविलोचनाय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ हुतभुजे नमः

ॐ भोक्त्रे नमः
 ॐ सुखदाय नमः
 ॐ नैकजाय नमः ८९०
 ॐ अग्रजाय नमः
 ॐ अनिर्विण्णाय नमः
 ॐ सदामर्षिणे नमः
 ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः
 ॐ अद्भुताय नमः
 ॐ सनाते नमः
 ॐ सनातनतमाय नमः
 ॐ कपिलाय नमः
 ॐ कपये नमः
 ॐ अव्ययाय नमः ९००
 ॐ स्वस्तिदाय नमः
 ॐ स्वस्तिकृते नमः
 ॐ स्वस्तये नमः
 ॐ स्वस्तिभुजे नमः
 ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः
 ॐ अरौद्राय नमः
 ॐ कुण्डलिने नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ विक्रमिणे नमः
 ॐ ऊर्जितशासनाय नमः ९१०

ॐ शब्दातिगाय नमः
 ॐ शब्दसहाय नमः
 ॐ शिशिराय नमः
 ॐ शर्वरीकराय नमः
 ॐ अक्रूराय नमः
 ॐ पेशलाय नमः
 ॐ दक्षाय नमः
 ॐ दक्षिणाय नमः
 ॐ क्षमिणां वराय नमः
 ॐ विद्वत्तमाय नमः १२०
 ॐ वीतभयाय नमः
 ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः
 ॐ उत्तारणाय नमः
 ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ दुस्स्वप्ननाशनाय नमः
 ॐ वीरघ्ने नमः
 ॐ रक्षणाय नमः
 ॐ सद्भ्यो नमः
 ॐ जीवनाय नमः १३०
 ॐ पर्यवस्थिताय नमः
 ॐ अनन्तरूपाय नमः
 ॐ अनन्तश्रिये नमः

ॐ जितमन्यवे नमः
 ॐ भयापहाय नमः
 ॐ चतुरश्राय नमः
 ॐ गभीरात्मने नमः
 ॐ विदिशाय नमः
 ॐ व्यादिशाय नमः
 ॐ दिशाय नमः १४०
 ॐ अनादये नमः
 ॐ भुवो भुवे नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः
 ॐ सुवीराय नमः
 ॐ रुचिराङ्गदाय नमः
 ॐ जननाय नमः
 ॐ जनजन्मादये नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ भीमपराक्रमाय नमः
 ॐ आधारनिलयाय नमः १५०
 ॐ अधात्रे नमः
 ॐ पुष्पहासाय नमः
 ॐ प्रजागराय नमः
 ॐ ऊर्ध्वगाय नमः
 ॐ सत्पथाचाराय नमः
 ॐ प्राणदाय नमः

ॐ प्रणवाय नमः
 ॐ पणाय नमः
 ॐ प्रमाणाय नमः
 ॐ प्राणनिलयाय नमः १६०
 ॐ प्राणभृते नमः
 ॐ प्राणजीवनाय नमः
 ॐ तत्त्वाय नमः
 ॐ तत्त्वविदे नमः
 ॐ एकात्मने नमः
 ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः
 ॐ भूर्भुवस्स्वस्तरवे नमः
 ॐ ताराय नमः
 ॐ सवित्रे नमः
 ॐ प्रपितामहाय नमः १७०
 ॐ यज्ञाय नमः
 ॐ यज्ञपतये नमः
 ॐ यज्वने नमः
 ॐ यज्ञाङ्गाय नमः
 ॐ यज्ञवाहनाय नमः
 ॐ यज्ञभृते नमः
 ॐ यज्ञकृते नमः
 ॐ यज्ञिने नमः
 ॐ यज्ञभुजे नमः

ॐ यज्ञसाधनाय नमः १८०
 ॐ यज्ञान्तकृते नमः
 ॐ यज्ञगुह्याय नमः
 ॐ अन्नाय नमः
 ॐ अन्नादाय नमः
 ॐ आत्मयोनये नमः
 ॐ स्वयञ्जाताय नमः
 ॐ वैखानाय नमः
 ॐ सामगायनाय नमः
 ॐ देवकीनन्दनाय नमः
 ॐ स्रष्ट्रे नमः १९०
 ॐ क्षितीशाय नमः
 ॐ पापनाशनाय नमः
 ॐ शङ्खभृते नमः
 ॐ नन्दकिने नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः
 ॐ गदाधराय नमः
 ॐ रथाङ्गपाणये नमः
 ॐ अक्षोभ्याय नमः
 ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः
 १०००

॥ श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

ॐ श्रीकृष्णाय नमः
 ॐ कमलानाथाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ सनातनाय नमः
 ॐ वसुदेवात्मजाय नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः
 ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः
 ॐ यशोदावत्सलाय नमः
 ॐ हरये नमः १०
 ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासि-
 गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः
 ॐ देवकीनन्दनाय नमः
 ॐ श्रीशाय नमः
 ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः
 ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः
 ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः
 ॐ पूतनाजीवितहराय नमः
 ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः
 ॐ नन्दव्रजजनानन्दिने नमः
 ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः

२०
 ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः
 ॐ नवनीतनटाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ नवनीतनवाहाराय नमः
 ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
 ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
 ॐ त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः
 ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
 ॐ गोविन्दाय नमः
 ॐ योगिनां पतये नमः ३०
 ॐ वत्सवाटचराय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धेनुकासुरमर्दनाय नमः
 ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः
 ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
 ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः
 ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः
 ॐ गोपगोपीश्वराय नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः

४०

ॐ इलापतये नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
 ॐ यादवेन्द्राय नमः
 ॐ यदूद्वहाय नमः
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ पीतवाससे नमः
 ॐ पारिजातापहारकाय नमः
 ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
 ॐ गोपालाय नमः
 ॐ सर्वपालकाय नमः ५०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ निरञ्जनाय नमः
 ॐ कामजनकाय नमः
 ॐ कञ्जलोचनाय नमः
 ॐ मधुघ्ने नमः
 ॐ मथुरानाथाय नमः
 ॐ द्वारकानायकाय नमः
 ॐ बलिने नमः
 ॐ बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः
 ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः
 ६०
 ॐ स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः

ॐ नरनारायणात्मकाय नमः
 ॐ कुब्जाकृष्णाम्बरधराय नमः
 ॐ मायिने नमः
 ॐ परमपूरुषाय नमः
 ॐ मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-
 विशारदाय नमः
 ॐ संसारवैरिणे नमः
 ॐ कंसारये नमः
 ॐ मुरारये नमः
 ॐ नरकान्तकाय नमः ७०
 ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः
 ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
 ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः
 ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः
 ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः
 ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः
 ॐ सत्यवाचे नमः
 ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सत्यभामारताय नमः
 ॐ जयिने नमः ८०
 ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः

ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ जगन्नाथाय नमः
 ॐ वेणुनादविशारदाय नमः
 ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः
 ॐ बाणासुरकरान्तकाय नमः
 ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः
 ॐ बर्हिर्बर्हावतंसकाय नमः १०
 ॐ पार्थसारथये नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ गीतामृतमहोदधये नमः
 ॐ कालीयफणिमाणिक्य-
 रञ्जितश्रीपदाम्बुजाय नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः

ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ परब्रह्मणे नमः
 ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः
 १००
 ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपी-
 वस्त्रापहारकाय नमः
 ॐ पुण्यश्लोकाय नमः
 ॐ तीर्थपादाय नमः
 ॐ वेदवेद्याय नमः
 ॐ दयानिधये नमः
 ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः
 ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः
 ॐ परात्पराय नमः १०८

॥उत्तराङ्गपूजा॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
 मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥
 श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
 ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्रीभूमिनीलासमेत महाविष्णवे नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोका अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।

सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॑दाज॒हारे। श॒क्रः प्रवि॒द्वान् प्र॒दिश॒श्चत॑स्रः।
तमे॒वं वि॒द्वान॒मृतं॑ इ॒ह भ॑वति। नान्यः पन्था॒ अय॑नाय विद्यते॥

यो॑ऽपां पुष्पं वेद॑। पुष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पुष्प॑म्। पुष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
य ए॒वं वेद॑। यो॑ऽपामा॒यत॑नं वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति।

ओं तद्ब्र॒ह्म। ओं तद्वा॒युः। ओं तदा॒त्मा।
ओं तथ्स॒त्यम्। ओं तथ्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोर्न॑मः॥

अन्तश्चरति॑ भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।
त्वं तदाप॒ आपो॒ ज्योती॒ रसो॒ऽमृतं॑ ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं
समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।
स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।
मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वं॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥

- छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्
एकादशीपुण्यकाले महाविष्णुपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

एकादश्यामुपोष्यैव पारणात् पूर्वकालतः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण सुरवन्दित॥
महाविष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

नमोऽस्तु केशवादिभ्यः सर्वलोकैकवन्दिताः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो भव सर्वदा॥

केशवादिभ्यः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

कूर्मरूपाय देवाय मत्स्यरूप नमोऽस्तुते।।
नीलमेघस्वरूपाय अर्घ्यं दत्तं मया प्रभो॥

विष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

क्षीरोद्भवे महालक्ष्मि सुप्रसन्ने सुरेश्वरि।
सर्वप्रदे जगद्वन्द्ये गृहीदार्यमिदं रमे॥॥

महालक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।
अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
श्री लक्ष्मीनारायणः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

एकादशीपुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णुपूजायां यद्वेयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नाथं हिरण्यं
श्रीभूमिनीलासमेत श्री महाविष्णुप्रीतिं कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

॥विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुं यथास्थानं
प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

॥उत्तरस्मिन् दिने पारणम्॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य व्रतेनानेन केशव।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे
मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि
षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^७ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने
वसन्तऋतौ मेषमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु /
भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम्
(स्वाती/?)^८ नक्षत्र ()^९ नाम योग () करण युक्तायां
च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्दश्यां शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं

^७पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^८पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^९पृष्ठं २२० पश्यताम्

पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि
 पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
 पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां
 पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री नृसिंह-
 जयन्ती-पुण्यकाले यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः
 श्री-नृसिंह-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।
 श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
 ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
 सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
 नमः।
 ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा॑ भू॒तान्यापः॑ प्रा॒णा वा आपः॑ प॒शव॑ आपो-
ऽन्नमापोऽमृत॑मापः॑ स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः॑ स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो॑
ज्योती॑ऽष्यापो॑ यजू॒ऽष्यापः॑ स॒त्यमापः॑ सर्वा॑ दे॒वता॑ आपो॑ भूर्भुवः॑
सुव॒राप॑ ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायामि देवदेवं तं शङ्खचक्रगदाधरम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मक्रामत्। साशनानशने अभि॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण हविषा॥ देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्॥ ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

सप्तास्यऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
 गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
 पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ अनघाय नमः — पादौ पूजयामि
२. वामनाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. शौरये नमः — जङ्घे पूजयामि
४. वैकुण्ठवासिने नमः — ऊरू पूजयामि
५. पुरुषोत्तमाय नमः — मेढ्रं पूजयामि
६. वासुदेवाय नमः — कटिं पूजयामि
७. हृषीकेशाय नमः — नाभिं पूजयामि
८. माधवाय नमः — हृदयं पूजयामि
९. मधुसूदनाय नमः — कण्ठं पूजयामि
१०. वराहाय नमः — बाहून् पूजयामि
११. नृसिंहाय नमः — हस्तान् पूजयामि
१२. दैत्यसूदनाय नमः — मुखं पूजयामि
१३. दामोदराय नमः — नासिकां पूजयामि
१४. पुण्डरीकाक्षाय नमः — नेत्रे पूजयामि
१५. गरुडध्वजाय नमः — श्रोत्रे पूजयामि
१६. गोविन्दाय नमः — ललाटं पूजयामि
१७. अच्युताय नमः — शिरः पूजयामि

१८. श्री-नृसिंहाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥चतुर्विंशति नामपूजा॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

ॐ श्रीनृसिंहाय नमः
 ॐ महासिंहाय नमः
 ॐ दिव्यसिंहाय नमः
 ॐ महाबलाय नमः

ॐ उग्रसिंहाय नमः
 ॐ महादेवाय नमः
 ॐ उपेन्द्राय नमः
 ॐ अग्निलोचनाय नमः

ॐ रौद्राय नमः
 ॐ शौरये नमः १०
 ॐ महावीराय नमः
 ॐ सुविक्रमपराक्रमाय नमः
 ॐ हरिकोलाहलाय नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ विजयाय नमः
 ॐ अजयाय नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ दैत्यान्तकाय नमः
 ॐ परब्रह्मणे नमः
 ॐ अघोराय नमः २०
 ॐ घोरविक्रमाय नमः
 ॐ ज्वालामुखाय नमः
 ॐ ज्वालमालिने नमः
 ॐ महाज्वालाय नमः
 ॐ महाप्रभवे नमः
 ॐ निटिलाक्षाय नमः
 ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ दुर्निरीक्षाय नमः
 ॐ प्रतापनाय नमः
 ॐ महादंष्ट्राय नमः ३०
 ॐ प्राज्ञाय नमः

ॐ हिरण्यक-निषूदनाय नमः
 ॐ चण्डकोपिने नमः
 ॐ सुरारिघ्नाय नमः
 ॐ सदातिघ्नाय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः
 ॐ गुणभद्राय नमः
 ॐ महाभद्राय नमः
 ॐ बलभद्राय नमः
 ॐ सुभद्रकाय नमः ४०
 ॐ करालाय नमः
 ॐ विकरालाय नमः
 ॐ गतायुषे नमः
 ॐ सर्वकर्तृकाय नमः
 ॐ भैरवाडम्बराय नमः
 ॐ दिव्याय नमः
 ॐ अगम्याय नमः
 ॐ सर्वशत्रुजिते नमः
 ॐ अमोघास्त्राय नमः
 ॐ शस्त्रधराय नमः ५०
 ॐ सव्यजूटाय नमः
 ॐ सुरेश्वराय नमः
 ॐ सहस्रबाहवे नमः
 ॐ वज्रनखाय नमः

ॐ सर्वसिद्धये नमः
 ॐ जनार्दनाय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ स्थूलाय नमः
 ॐ अगम्याय नमः ६०
 ॐ परावराय नमः
 ॐ सर्वमन्त्रैकरूपाय नमः
 ॐ सर्वयन्त्रविदारणाय नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ परमानन्दाय नमः
 ॐ कालजिते नमः
 ॐ खगवाहनाय नमः
 ॐ भक्तातिवत्सलाय नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ सुव्यक्ताय नमः ७०
 ॐ सुलभाय नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ लोकैकनायकाय नमः
 ॐ सर्वाय नमः
 ॐ शरणागतवत्सलाय नमः
 ॐ धीराय नमः
 ॐ धराय नमः

ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ भीमपराक्रमाय नमः ८०
 ॐ देवप्रियाय नमः
 ॐ नुताय नमः
 ॐ पूज्याय नमः
 ॐ भवहृते नमः
 ॐ परमेश्वराय नमः
 ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
 ॐ श्रीवासाय नमः
 ॐ विभवे नमः
 ॐ सङ्कर्षणाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः ९०
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ कालाय नमः
 ॐ सर्वेश्वराय नमः
 ॐ विश्वम्भराय नमः
 ॐ स्थिराभाय नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ अधोक्षजाय नमः
 ॐ अक्षयाय नमः १००

ॐ सेव्याय नमः

ॐ वनमालिने नमः

ॐ प्रकम्पनाय नमः

ॐ गुरवे नमः

ॐ लोकगुरवे नमः

ॐ स्रष्ट्रे नमः

ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः

ॐ परायणाय नमः १०८

॥उत्तराङ्गपूजा॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्धीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अभिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः () पानकं च निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।

ओं तथ्स॒त्यम्। ओं तथ्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोर्नमः॥

अन्तश्चरति॑ भू॒तेषु॑ गुहा॒यां वि॑श्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञ॑स्त्वं वष॒ट्कार॑स्त्वमिन्द्र॒स्त्व॑

रुद्र॑स्त्वं विष्णु॒स्त्वं ब्र॑ह्म त्वं प्रजा॒पतिः॑।

त्वं तदा॑प॒ आपो॑ ज्योती॒ रसो॑ऽमृतं॒ ब्रह्म॑ भूर्भुवः॒ सुव॑रोम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वं सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥

- छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्
नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं
करिष्ये॥

हिरण्याक्षवधार्थाय भूभारोत्तरणाय च।
परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मी-नृहरे स्वयम्॥
श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-प्रीतिं कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

॥विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥
मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यन्ति चापरे।
तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात्॥
पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवारिभिः।
तीव्रैश्च परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे॥
करावलम्बनं देहि शेषशायिन् जगतपते।
श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन॥
क्षीराब्धिनिवासिन् त्वं चक्रपाणे जनार्दन।
व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा

बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै

नारायणायेति

समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।



॥ श्री धन्वन्तरिपूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा — धन्वन्तरिपूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके
प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१०} नाम संवत्सरे दक्षिनायने
शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभतिथौ (इन्दु /
भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम्
()^{११} नक्षत्र ()^{१२} नाम योग () करण युक्तायां च
एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् त्रयोदश्यां शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं

^{१०}पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^{११}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{१२}पृष्ठं २२० पश्यताम्

पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीधन्वन्तरि-देवता-प्रीत्यर्थं श्री धन्वन्तरि-देवता-प्रीति-पूर्वकम् आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार धन्वन्तरि-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा॑ भू॒तान्यापः॑ प्रा॒णा वा आपः॑ प॒शव॑ आपो-
ऽन्नमापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः॑ स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो॑
ज्योती॑ऽष्यापो॑ यजू॑ऽष्यापः स॒त्यमापः॑ सर्वा दे॒वता॑ आपो॑ भूर्भुवः॑
सुव॒राप॑ ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्।
 ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्॥
 युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्।
 दधानममृतस्यैव कमण्डलुं श्रिया युतम्॥
 यज्ञ-भोग-भुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्।
 ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्॥
 अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
 स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥
 अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
 उतामृतत्वस्थेऽनः। यदन्नेनातिरोहति॥
 आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाःश्च पूरुषः।
 पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
 पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पाद॑र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॑ वि॒श्वङ्म॑क्रामत्। सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्मा॑द्विराड॑जायत। वि॒राजो॑ अधि पू॒रुषः॑।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥
आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

स॒प्तास्य॑ऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं॑ प॒शुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्र॒तः।
तेन॑ दे॒वा अय॑जन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। सम्भृ॑तं पृषदाज्यम्।
प॒शूँस्ता॑श्च॒क्रे वाय॑व्यान्। आ॒र॒ण्यान्ग्रा॒म्याश्च॒ ये॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः।
गार्वा ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

- | | | |
|-----|----------------------|-------------------|
| १. | ॐ वराहाय नमः | — पादौ पूजयामि |
| २. | सङ्कर्षणाय नमः | — गुल्फौ पूजयामि |
| ३. | कालात्मने नमः | — जानुनी पूजयामि |
| ४. | विश्वरूपाय नमः | — जङ्घे पूजयामि |
| ५. | क्रोढाय नमः | — ऊरू पूजयामि |
| ६. | भोक्त्रे नमः | — कटिं पूजयामि |
| ७. | विष्णवे नमः | — मेढ्रं पूजयामि |
| ८. | हिरण्यगर्भाय नमः | — नाभिं पूजयामि |
| ९. | श्रीवत्सधारिणे नमः | — कुक्षिं पूजयामि |
| १०. | परमात्मने नमः | — हृदयं पूजयामि |
| ११. | सर्वास्त्रधारिणे नमः | — वक्षः पूजयामि |
| १२. | वनमालिने नमः | — कण्ठं पूजयामि |

- | | |
|----------------------|---------------------------|
| १३. सर्वात्मने नमः | — मुखं पूजयामि |
| १४. सहस्राक्षाय नमः | — नेत्राणि पूजयामि |
| १५. सुप्रभाय नमः | — ललाटं पूजयामि |
| १६. चम्पकनासिकाय नमः | — नासिकां पूजयामि |
| १७. सर्वेशाय नमः | — कर्णौ पूजयामि |
| १८. सहस्रशिरसे नमः | — शिरः पूजयामि |
| १९. नीलमेघनिभाय नमः | — केशान् पूजयामि |
| २०. महापुरुषाय नमः | — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि |

॥चतुर्विंशति नामपूजा॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

ॐ धन्वन्तरये नमः
 ॐ सुधापूर्णकलशाढ्यकराय नमः
 ॐ हरये नमः
 ॐ जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थना-
 साधकाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ निर्विकल्पाय नमः
 ॐ निस्समानाय नमः
 ॐ मन्दस्मितमुखाम्बुजाय नमः
 ॐ आज्ञनेयप्रापिताद्रये नमः
 ॐ पार्श्वस्थविनतासुताय नमः
 १०
 ॐ निमग्नमन्दरधराय नमः
 ॐ कूर्मरूपिणे नमः
 ॐ बृहत्तनवे नमः
 ॐ नीलकुञ्चितकेशान्ताय नमः
 ॐ परमाद्भुतरूपधृते नमः
 ॐ कटाक्षवीक्षणाश्वस्त-
 वासुकिने नमः

ॐ सिंहविक्रमाय नमः
 ॐ स्मर्तृहृद्रोगहरणाय नमः
 ॐ महाविष्णवंशसम्भवाय नमः
 ॐ प्रेक्षणीयोत्पलश्यामाय नमः २०
 ॐ आयुर्वेदाधिदैवताय नमः
 ॐ भेषजग्रहणानेहस्मरणीय-
 पदाम्बुजाय नमः
 ॐ नवयौवनसम्पन्नाय नमः
 ॐ किरीटान्वितमस्तकाय नमः
 ॐ नक्रकुण्डलसंशोभि-
 श्रवणद्वयशष्कुलये नमः
 ॐ दीर्घपीवरदोर्दण्डाय नमः
 ॐ कम्बुग्रीवाय नमः
 ॐ अम्बुजेक्षणाय नमः
 ॐ चतुर्भुजाय नमः
 ॐ शङ्खधराय नमः ३०
 ॐ चक्रहस्ताय नमः
 ॐ वरप्रदाय नमः
 ॐ सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्र-

लसत्कराय नमः

ॐ शतपद्याढ्यहस्ताय नमः

ॐ

कस्तूरीतिलकाञ्चिताय नमः

ॐ सुकपोलाय नमः

ॐ सुनासाय नमः

ॐ सुन्दरभ्रूलताञ्चिताय नमः

ॐ

स्वङ्गुलीतलशोभाढ्याय नमः

ॐ गूढजत्रवे नमः ४०

ॐ महाहनवे नमः

ॐ दिव्याङ्गदलसद्वाहवे नमः

ॐ केयूरपरिशोभिताय नमः

ॐ विचित्ररत्नखचितवलयद्वय-

शोभिताय नमः

ॐ

समोल्लसत्सुजातांसाय नमः

ॐ अङ्गुलीयविभूषिताय नमः

ॐ

सुधागन्धरसास्वादमिलद्भृङ्ग-

मनोहराय नमः

ॐ लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्ल-

कञ्जमालालसद्गलाय नमः

ॐ

लक्ष्मीशोभितवक्षस्काय नमः

ॐ वनमालाविराजिताय नमः

५०

ॐ नवरत्नमणीकृतहारशोभित-
कन्धराय नमः

ॐ

हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जित-
दिङ्गुखाय नमः

ॐ विरजाय नमः

ॐ अम्बरसंवीताय नमः

ॐ विशालोरवे नमः

ॐ पृथुश्रवसे नमः

ॐ निम्ननाभये नमः

ॐ सूक्ष्ममध्याय नमः

ॐ स्थूलजङ्घाय नमः

ॐ निरञ्जनाय नमः ६०

ॐ सुलक्षणपदाङ्गुष्ठाय नमः

ॐ सर्वसामुद्रिकान्विताय नमः

ॐ अलक्तकारक्तपादाय नमः

ॐ मूर्तिमते नमः

ॐ वार्धिपूजिताय नमः

ॐ

सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेय-
सान्त्वनाय नमः
ॐ कोटिमन्मथसङ्काशाय नमः
ॐ सर्वावयवसुन्दराय नमः
ॐ अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घ-
परिष्ठताय नमः
ॐ पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुल-
सेविताय नमः ७०
ॐ शङ्खतूर्यमृदङ्गादि-
सुवादित्राप्सररोवृताय नमः
ॐ
विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वाय नमः
ॐ सनकादिमुनिस्तुताय नमः
ॐ साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्र-
समीक्षिताय नमः
ॐ
साशङ्कसम्भ्रमदितिदनुवंश्य-
समीडिताय नमः
ॐ नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्न-
लसत्पदाय नमः
ॐ दिव्यतेजसे नमः
ॐ पुञ्जरूपाय नमः
ॐ सर्वदेवहितोत्सुकाय नमः

ॐ स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशये
नमः ८०
ॐ दुन्दुभिस्वनाय नमः
ॐ गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्क-
महामनसे नमः
ॐ निष्किञ्चनजनप्रीताय नमः
ॐ भवसम्प्राप्तरोगहृते नमः
ॐ अन्तर्हितसुधापात्राय नमः
ॐ महात्मने नमः
ॐ मायिकाग्रण्ये नमः
ॐ क्षणार्धमोहिनीरूपाय नमः
ॐ सर्वस्त्रीशुभलक्षणाय नमः
ॐ मदमत्तेभगमनाय नमः ९०
ॐ सर्वलोकविमोहनाय नमः
ॐ संसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्त-
दिव्यकराङ्गुलिने नमः
ॐ रत्नदर्वीलसद्धस्ताय नमः
ॐ देवदैत्यविभागकृते नमः
ॐ सङ्ख्यातदेवतान्यासाय नमः
ॐ दैत्यदानववञ्चकाय नमः
ॐ देवामृतप्रदात्रे नमः
ॐ परिवेषणहृष्टधिये नमः
ॐ उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्त-

पङ्क्तिविभाजकाय नमः
 ॐ पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षः-
 शिरोहराय नमः १००
 ॐ राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गति-
 विधायकाय नमः
 ॐ अमृतालाभनिर्विण्ण-
 युध्यद्देवारिसूदनाय नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनारूढाय नमः
 ॐ सर्वेशस्तोत्रसंयुताय नमः
 ॐ स्वस्वाधिकारसन्तुष्ट-

शक्रवह्न्यादिपूजिताय नमः
 ॐ मोहिनीदर्शनायात-
 स्थाणुचित्तविमोहकाय नमः
 ॐ शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नी-
 मण्डलसन्नुताय नमः
 ॐ वेदान्तवेद्यमहिम्ने नमः
 ॐ सर्वलोकैकरक्षकाय नमः
 ॐ राजराजप्रपूज्याङ्घ्रये नमः
 ११०
 ॐ चिन्तितार्थप्रदायकाय नमः

॥उत्तराङ्गपूजा॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यकल्पयन्।
 मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम्।
 धूपं गृहाण देवेश सर्वभूत मनोहर॥

श्री धन्वन्तरये नमः धूपमाघ्रापयामि।
 ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
 ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्त्रिर्ऋतिं मम।
 पशूँश्च मह्यमावह जीवेन च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्।
 अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥
 श्री धन्वन्तरये नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि ।

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
 मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

- श्री धन्वन्तरये नमः () निवेदयामि,
 अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
 पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
 कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।
 सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्तै॥

श्री धन्वन्तरये नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
 दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
 तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं
प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ - स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

- अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

- छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

धन्वन्तरिजयन्ती-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण

धन्वन्तरिपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री
धन्वन्त्रिप्रीतिम् कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः

न मम। अनया पूजया श्री धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

॥विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री धन्वन्तरिं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि

(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

अनया पूजया श्री धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥

॥ श्री लक्ष्मी-कुबेर-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१३} नाम संवत्सरे
दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे अमावास्यायां
शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु)
वासरयुक्तायाम् ()^{१४} नक्षत्र ()^{१५} नाम योग (चतुष्पात्/नागव)
करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
अमावास्यायां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च

^{१३}पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^{१४}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{१५}पृष्ठं २२० पश्यताम्

सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
सकल पापक्षयार्थं श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-पूजां
करिष्ये। तदङ्गं मातृगणपूजां नवग्रहपूजां लोकपाल-पूजां च
करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय
पुनरागमनाय च।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा॑ भू॒तान्यापः॑ प्रा॒णा वा आपः॑ प॒शव॑
 आपोऽन्न॑मापोऽमृत॑मापः॑ स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः॑
 स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो॑ ज्योती॒ऽष्यापो॑ यजू॒ऽष्यापः॑ स॒त्यमापः॑

सर्वा॑ दे॒वता॑ आपो॑ भूर्भुवः॑ सुव॒राप॑ ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
 मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः॑ सुवो॑ भूर्भुवः॑ सुवो॑ भूर्भुवः॑ सुवः॑।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|--------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ३. ॐ योगात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |

५. ॐ परमात्मने नमः

६. ॐ ज्ञानात्मने नमः

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।

त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

१. ॐ आधारशक्त्यै नमः

८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः

२. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः

९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः

३. ॐ आदिकूर्माय नमः

१०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः

४. ॐ आदिवराहाय नमः

११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः

५. ॐ अनन्ताय नमः

१२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः

६. ॐ पृथिव्यै नमः

१३. ॐ सितचामराभ्यां नमः

७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः

१४. ॐ योगपीठासनाय नमः

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥मातृगणपूजा॥

- | | |
|---------------------|-----------------------------|
| १. ॐ गौर्यै नमः | ९. ॐ स्वधायै नमः |
| २. ॐ पद्मायै नमः | १०. ॐ स्वाहायै नमः |
| ३. ॐ शच्यै नमः | ११. ॐ मातृभ्यो नमः |
| ४. ॐ मेधायै नमः | १२. ॐ लोकमातृभ्यो नमः |
| ५. ॐ सावित्र्यै नमः | १३. ॐ धृत्यै नमः |
| ६. ॐ विजयायै नमः | १४. ॐ पुष्ट्यै नमः |
| ७. ॐ जयायै नमः | १५. ॐ तुष्ट्यै नमः |
| ८. ॐ देवसेनायै नमः | १६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः |

षोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं
समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं
समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

आभरणार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। धूपदीपार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

नैवेद्यम्। (कदलीफलानि)

कर्पूरताम्बूलं कर्पूरनीराजनार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥
अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥नवग्रहपूजा॥

(चित्रे दर्शितया रीत्या मण्डलानि प्रतिष्ठाप्य आरभेत।)

| | | |
|---|--|---|
| ४. बुधः हरितवस्त्रम् मुद्ग-मण्डलम् | ६. शुक्रः श्वेतवस्त्रम् राजमाष-मण्डलम् | २. सोमः श्वेतवस्त्रम् तण्डुल-मण्डलम् |
| ५. बृहस्पतिः पीतवस्त्रम् चणक-मण्डलम् | १. आदित्यः रक्तवस्त्रम् गोधूम-मण्डलम् | ३. अङ्गारकः रक्तवस्त्रम् आढकी-मण्डलम् |
| ९. केतुः कृष्णवस्त्रम् कुलत्थ-मण्डलम् | ७. शनैश्वरः कृष्णवस्त्रम् तिल-मण्डलम् | ८. राहुः कृष्णवस्त्रम् माष-मण्डलम् |

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो निवेशय॑न्नमृतं॒ मर्त्यं॑ च। हिर॒ण्यये॑न
सवि॒ता रथे॑नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना वि॒पश्यन्॑। अ॒ग्निं द॑तं वृ॒णीमहे॑
होता॑रं वि॒श्ववे॑दसम्। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म्॥ येषा॒मीशे॑ पशु॒पतिः॑
पशू॑नां चतु॑ष्पदामु॒त च॑ द्वि॒पदा॑म्। निष्क्री॑तोऽयं य॒ज्ञियं॑ भा॒गमे॑तु
रा॒यस्पोषा॑ यज॑मानस्य सन्तु॥ अधिदे॒वता॑ प्रत्यधिदे॒वता॑ स॒हिता॑य
आदि॒त्याय॒ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं आदित्य-ग्रहं
ध्यायामि। आवाहयामि।

दधि॒शङ्ख॑तुषाराभं॒ क्षीरो॑दार॒णव॑सम्भवम्।
नमामि॒ शशि॑नं सोमं शम्भो॑र्मुकुटभूषणम्॥२॥

आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्णि॑यम्। भवा॒ वाज॑स्य
सङ्ग॑थे॥ अ॒प्सु मे॒ सोमो॑ अब्रवीद॒न्तर्वि॑श्वानि भेष॒जा। अ॒ग्निं च॑
वि॒श्वश॑म्भुव॒माप॑श्च वि॒श्वभे॑षजीः। गौरी॒ मि॑माय स॒लिलानि॑ तक्ष॒ती।
एक॑पदी द्वि॒पदी॒ सा चतु॑ष्पदी। अ॒ष्टाप॑दी नव॑पदी बभूवु॒षी।
स॒हस्रा॑क्षरा पर॒मे व्यो॑मन्। अधिदे॒वता॑ प्रत्यधिदे॒वता॑ स॒हिता॑य
सोमा॒य नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं सोम-ग्रहं
ध्यायामि। आवाहयामि।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥३॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा९ रेता९सि
जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म
सप्रथाः। क्षेत्रस्य पतिना वय९ हिते नैव जयामसि। गामश्वं
पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय
अङ्गारकाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं अङ्गारक-ग्रहं
ध्यायामि। आवाहयामि।

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥४॥

उद्ध्व्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्ये स९सृजेथामयं च। पुनः
कृण्व९स्त्वा पितरं युवानमन्वाता९सीत्वयि तन्तुमेतम्॥ इदं
विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपा९ सुरे॥ विष्णो
रराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णोः श्रत्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता
सहिताय बुधाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बुध-ग्रहं
ध्यायामि। आवाहयामि।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काश्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥५॥

बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्विमद्विभाति क्रतुमञ्जनेषु।
यद्दीदयच्छ्वंसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व
इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य। तव प्रणीती तव
शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं
पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुधिया उपमा अस्य
विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता
सहिताय बृहस्पतये नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बृहस्पति-ग्रहं
ध्यायामि। आवाहयामि।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥६॥

प्रवः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्रये सुपूतम्॥ यो
दैव्यानि मानुषा जनुष्यन्तर्विश्वानि विद्म ना जिगाति॥
इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमश्रवम्। न ह्यस्या अपरश्च न
जुरसा मरते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः।
अस्माकमस्तु केवलः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय
नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शुक्र-ग्रहं

ध्यायामि। आवाहयामि।

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्। इमं

यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्त्राः

कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व॥ अधिदेवता

प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शनैश्चर-ग्रहं

ध्यायामि। आवाहयामि।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।

आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः।

यत्तं देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामं ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदं ते

तद्विष्याम्यायुषो न मध्यादथाजीवः पितुमद्धि प्रमुक्तः॥ अधिदेवता

प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं राहु-ग्रहं

ध्यायामि। आवाहयामि।

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥१॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्विरजायथाः॥ ब्रह्मा
देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो
गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्)
सचित्रं चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं
रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं केतु-ग्रहं
ध्यायामि। आवाहयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। पादं
समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पैः पूजयामि।

१. ॐ आदित्याय नमः

२. ॐ अङ्गारकाय नमः

३. ॐ शुक्राय नमः

४. ॐ सोमाय नमः
५. ॐ बुधाय नमः
६. ॐ बृहस्पतये नमः
७. ॐ शनैश्चराय नमः
८. ॐ राहवे नमः
९. ॐ केतवे नमः

नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा)
यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥लोकपालपूजा॥

प्राणान् आयम्य। ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा
श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य-पूर्वोक्त एवं गुण-विशेषेण विशिष्टायाम्
अस्यां अमावास्यायां शुभतिथौ श्रीमहालक्ष्मी-पूजाङ्गभूतां
ब्रह्म-विष्णु-त्र्यम्बक-क्षेत्रपाल-पूजां करिष्ये।

अस्मिन् कूर्चे ब्रह्मादीन् ध्यायामि। ब्रह्मन् सरस्वत्या सह इह
आगच्छ आगच्छ। सरस्वती-सहित-ब्रह्माणम् आवाहयामि।

आसनं समर्पयामि।

लक्ष्मी-विष्णुभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

दुर्गा-त्र्यम्बकाभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

क्षेत्रपाल-भूमिभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम्

आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं

प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥प्रार्थना॥

विघ्नराजं नमस्कृत्य नमस्कृत्य विधिं परम्।

विष्णुं रुद्रं श्रियं दुर्गां वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥

क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य दिवानाथं निशाकरम्।
 धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥
 दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
 राहुकेतू नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥

शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च प्रणमाम्यहम्।
 गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥
 वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं भृगोः सुतम्।
 व्यासं मुनिं नमस्कृत्य आचार्याश्च तपोधनान्॥
 सर्वान् तान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा।
 शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग-पद्मपाणिर्जनार्दनः ॥
 सर्वासु दिक्षु रक्षेन्मां यावत् पूजावसानकम्।

॥षोडशोपचारपूजा॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
 करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च।
 मणिमकुटविचित्रालङ्कृता कल्पजातैः
 भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥
 अस्मिन् बिम्बे श्रीमहालक्ष्मीं ध्यायामि।
 आवाहये महालक्ष्मि चैतन्यस्तन्यदायिनि।
 विष्णुपत्नि जगन्मातः पूजां गृह्णीष्व ते नमः॥
 श्रीमहालक्ष्मीम् आवाहयामि।

तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
 अमलं कमलं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्॥
 आसनं समर्पयामि।

गङ्गातीर्थ-समुद्भूतं गन्ध-पुष्पादिभिर्युतम्।
 पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥
 पाद्यं समर्पयामि।

एलागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपूरितम्।
 अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं प्रसीद त्वं महेश्वरि॥
 अर्घ्यं समर्पयामि।

सर्वलोकस्य या शक्तिः ब्रह्मरुद्रादिभिः स्तुता।
 ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥
 आचमनीयं समर्पयामि।

घृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 पयसा स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 दध्ना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 मधुना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 पञ्चामृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 (कलशजलेन श्री-सूक्तं जप्य) शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
 स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कञ्चुकं च मनोहरम्।
 महालक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽर्पितम्॥

वस्त्रं समर्पयामि।

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताविद्रुमसंयुतम्।
दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥

कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नकङ्कणवैडूर्य-मुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि त्वं गृहाण मे॥

आभरणानि समर्पयामि।

सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया।
अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

तिलकं समर्पयामि।

मन्दार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा।
माकन्दं कुरवं चैव गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥

पुष्पमालां धारयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ चपलायै नमः — पादौ पूजयामि
२. चञ्चलायै नमः — जानुनी पूजयामि
३. कमलायै नमः — कटिं पूजयामि
४. कात्यायन्यै नमः — नाभिं पूजयामि
५. जगन्मात्रे नमः — जठरं पूजयामि

६. विश्ववल्लभायै नमः — वक्षःस्थलं पूजयामि
 ७. कमलवासिन्यै नमः— हस्तौ पूजयामि
 ८. पद्माननायै नमः — मुखं पूजयामि
 ९. कमलपत्राक्ष्यै नमः — नेत्रत्रयं पूजयामि
 १०. श्रियै नमः — शिरः पूजयामि
 ११. महालक्ष्म्यै नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥अष्टलक्ष्मी-अर्चना॥

(प्राच्याम् आरभ्य अष्टदिक्षु प्रदक्षिणेन)

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| १. ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः | ५. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः |

आद्यादिलक्ष्मीनां षोडशोपचारपूजार्थं पुष्पाणि समर्पयामि।

॥लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

- | | |
|-------------------------|--------------------|
| ॐ प्रकृत्यै नमः | ॐ विभूत्यै नमः |
| ॐ विकृत्यै नमः | ॐ सुरभ्यै नमः |
| ॐ विद्यायै नमः | ॐ परमात्मिकायै नमः |
| ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः | ॐ वाचे नमः |
| ॐ श्रद्धायै नमः | ॐ पद्मालयायै नमः |

ॐ पद्मायै नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ स्वाहायै नमः
 ॐ स्वधायै नमः
 ॐ सुधायै नमः
 ॐ धन्यायै नमः
 ॐ हिरण्मय्यै नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः
 ॐ नित्यपुष्टायै नमः
 ॐ विभावर्यै नमः २०
 ॐ अदित्यै नमः
 ॐ दित्यै नमः
 ॐ दीप्तायै नमः
 ॐ वसुधायै नमः
 ॐ वसुधारिण्यै नमः
 ॐ कमलायै नमः
 ॐ कान्तायै नमः
 ॐ कामायै नमः
 ॐ क्षीरोदसम्भवायै नमः
 ॐ अनुग्रहपदायै नमः ३०
 ॐ बुद्धये नमः
 ॐ अनघायै नमः
 ॐ हरिवल्लभायै नमः

ॐ अशोकाममृतायै नमः
 ॐ दीप्तायै नमः
 ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
 ॐ धर्मनिलयायै नमः
 ॐ करुणायै नमः
 ॐ लोकमात्रे नमः
 ॐ पद्मप्रियायै नमः ४०
 ॐ पद्महस्तायै नमः
 ॐ पद्माक्ष्यै नमः
 ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः
 ॐ पद्मोद्भवायै नमः
 ॐ पद्ममुख्यै नमः
 ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः
 ॐ रमायै नमः
 ॐ पद्ममालाधरायै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ पद्मिन्यै नमः ५०
 ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः
 ॐ पुण्यगन्धायै नमः
 ॐ सुप्रसन्नायै नमः
 ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
 ॐ प्रभायै नमः
 ॐ चन्द्रवदनायै नमः

ॐ चन्द्रायै नमः
 ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ चन्द्ररूपायै नमः ६०
 ॐ इन्दिरायै नमः
 ॐ इन्दुशीतलायै नमः
 ॐ आह्लादजनन्यै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ शिवायै नमः
 ॐ शिवकर्यै नमः
 ॐ सत्यै नमः
 ॐ विमलायै नमः
 ॐ विश्वजनन्यै नमः
 ॐ तुष्ट्यै नमः ७०
 ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
 ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
 ॐ श्रियै नमः
 ॐ भास्कर्यै नमः
 ॐ बिल्वनिलयायै नमः
 ॐ वरारोहायै नमः
 ॐ यशस्विन्यै नमः

ॐ वसुन्धरायै नमः ८०
 ॐ उदाराङ्गायै नमः
 ॐ हरिण्यै नमः
 ॐ हेममालिन्यै नमः
 ॐ धनधान्यकर्यै नमः
 ॐ सिद्ध्यै नमः
 ॐ स्नेहसौम्यायै नमः
 ॐ शुभप्रदायै नमः
 ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः
 ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
 ॐ वसुप्रदायै नमः ९०
 ॐ शुभायै नमः
 ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
 ॐ समुद्रतनयायै नमः
 ॐ जयायै नमः
 ॐ मङ्गलायै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ
 विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः
 ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
 ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
 ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः
 १००

ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः

ॐ

ॐ देव्यै नमः

ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः

ॐ सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः

ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः

ॐ नवदुर्गायै नमः

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः

ॐ महाकाल्यै नमः

॥उत्तराङ्गपूजा॥

वनस्पति-रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।

तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वर॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि ।

नैवेद्यं गृह्यतां लक्ष्मि भक्ष्य-भोज्य-समन्वितम्।

षड्रसैरचितं दिव्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते॥

नैवेद्यम्

- श्री महालक्ष्म्यै नमः () निवेदयामि,

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

श्री महालक्ष्म्यै नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं

दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्ममः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं
प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

आश्वयुज-अमावास्या-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण

श्रीमहालक्ष्मी-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं

श्री महालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे

नमः न मम। अनया पूजया श्री महालक्ष्मीः प्रीयताम्।

॥ईशानादि पूजा॥

॥कुबेर पूजा॥

॥कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः॥

मनुजबाह्यविमानवरस्तुतम्
गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्
वररुचिं तमहमुपास्महे सदा॥

अगस्त्य देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया।
पूजयामि विधानेन प्रसन्नसुमुखो भव॥

| | |
|---------------------------|--------------------------|
| ॐ कुबेराय नमः | ॐ मकराख्यनिधिप्रियाय नमः |
| ॐ धनदाय नमः | ॐ सुकच्छपाख्यनिधीशाय |
| ॐ श्रीमते नमः | नमः |
| ॐ यक्षेशाय नमः | ॐ मुकुन्दनिधिनायकाय नमः |
| ॐ गुह्यकेश्वराय नमः | ॐ कुन्दाख्यनिधिनाथाय नमः |
| ॐ निधीशाय नमः | ॐ नीलनित्याधिपाय नमः |
| ॐ शङ्करसखाय नमः | ॐ महते नमः |
| ॐ महालक्ष्मीनिवासभुवे नमः | ॐ वरनिधिदीपाय नमः |
| ॐ महापद्मनिधीशाय नमः | ॐ पूज्याय नमः २० |
| ॐ पूर्णाय नमः १० | ॐ लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय |
| ॐ पद्मनिधीश्वराय नमः | नमः |
| ॐ शङ्खाख्यनिधिनाथाय नमः | ॐ इलपिलापत्याय नमः |

ॐ कोशाधीशाय नमः
 ॐ कुलोचिताय नमः
 ॐ अश्वारूढाय नमः
 ॐ विश्ववन्द्याय नमः
 ॐ विशेषज्ञाय नमः
 ॐ विशारदाय नमः
 ॐ नलकूबरनाथाय नमः
 ॐ मणिग्रीवपित्रे नमः ३०
 ॐ गूढमन्त्राय नमः
 ॐ वैश्रवणाय नमः
 ॐ चित्रलेखामनःप्रियाय नमः
 ॐ एकपिनाकाय नमः
 ॐ अलकाधीशाय नमः
 ॐ पौलस्त्याय नमः
 ॐ नरवाहनाय नमः
 ॐ कैलासशैलनिलयाय नमः
 ॐ राज्यदाय नमः
 ॐ रावणाग्रजाय नमः ४०
 ॐ चित्रचैत्ररथाय नमः
 ॐ उद्यानविहाराय नमः
 ॐ विहारसुकुतूहलाय नमः
 ॐ महोत्सहाय नमः
 ॐ महाप्राज्ञाय नमः

ॐ सदापुष्पकवाहनाय नमः
 ॐ सार्वभौमाय नमः
 ॐ अङ्गनाथाय नमः
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ सौम्यादिकेश्वराय नमः ५०
 ॐ पुण्यात्मने नमः
 ॐ पुरुहुतश्रियै नमः
 ॐ सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः
 ॐ नित्यकीर्तये नमः
 ॐ निधिवेत्रे नमः
 ॐ लङ्काप्राक्तननायकाय नमः
 ॐ यक्षिणीवृताय नमः
 ॐ यक्षाय नमः
 ॐ परमशान्तात्मने नमः
 ॐ यक्षराजे नमः ६०
 ॐ यक्षिणीहृदयाय नमः
 ॐ किन्नरेश्वराय नमः
 ॐ किम्पुरुषनाथाय नमः
 ॐ खड्गायुधाय नमः
 ॐ वशिने नमः
 ॐ ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः
 ॐ वायुवामसमाश्रयाय नमः
 ॐ धर्ममार्गनिरताय नमः

ॐ धर्मसम्मुखसंस्थिताय नमः
 ॐ नित्येश्वराय नमः ७०
 ॐ धनाध्यक्षाय नमः
 ॐ अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय
 नमः
 ॐ मनुष्यधर्मिणे नमः
 ॐ सुकृतिने नमः
 ॐ कोषलक्ष्मीसमाश्रिताय
 नमः
 ॐ धनलक्ष्मीनित्यवासाय नमः
 ॐ धान्यलक्ष्मीनिवासभुवे नमः
 ॐ अष्टलक्ष्मीसदावासाय नमः
 ॐ गजलक्ष्मीस्थिरालयाय
 नमः
 ॐ राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय
 नमः ८०
 ॐ धैर्यलक्ष्मीकृपाश्रयाय नमः
 ॐ अखण्डैश्वर्यसंयुक्ताय नमः
 ॐ नित्यानन्दाय नमः
 ॐ सुखाश्रयाय नमः
 ॐ नित्यतृप्ताय नमः
 ॐ निराशाय नमः
 ॐ निरुपद्रवाय नमः
 ॐ नित्यकामाय नमः

ॐ निराकाङ्क्षाय नमः
 ॐ निरूपाधिकवासभुवे नमः
 १०
 ॐ शान्ताय नमः
 ॐ सर्वगुणोपेताय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ सर्वसम्मताय नमः
 ॐ सर्वाणिकरुणापात्राय नमः
 ॐ सदानन्दकृपालयाय नमः
 ॐ गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः
 ॐ सौगन्धिककुसुमप्रियाय
 नमः
 ॐ स्वर्णनगरीवासाय नमः
 ॐ निधिपीठसमाश्रयाय नमः
 १००
 ॐ महामेरूत्तरस्थाय नमः
 ॐ महर्षिगणसंस्तुताय नमः
 ॐ तुष्टाय नमः
 ॐ शूर्पणखाज्येष्ठाय नमः
 ॐ शिवपूजारताय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ राजयोगसमायुक्ताय नमः
 ॐ राजशेखरपूज्याय नमः
 ॐ राजराजाय नमः

॥प्रार्थना॥

॥अपराध-क्षमापनम्॥

॥ श्री तुलसी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा — तुलसी-पूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१६} नाम संवत्सरे
दक्षिनायने शरद-ऋतौ वृश्चिकमासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां शुभतिथौ
(इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु)
वासरयुक्तायाम् ()^{१७} नक्षत्र ()^{१८} नाम योग () करण
युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां /
द्वादश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च

^{१६}पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^{१७}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{१८}पृष्ठं २२० पश्यताम्

सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
सकल पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति
ध्यानावाहनादि षोडशोपचार श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये।
तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः
स्वराडापश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः ष्यापो यजूः ष्यापः सत्यमापः
सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेच्च तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
प्रसन्नां पद्मकल्हारां वरदाभ्यां चतुर्भुजाम्॥

किरीटहारकेयूरकुण्डलाद्यैर्विभूषिताम् ।
धवलां शुकसंवीतां पद्मासननिषेविताम्।
देवीं त्रैलोक्यजननीं सर्वलोकैकपावनीम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महाविष्णुं तुलसीं च ध्यायामि।

सर्वदेवमयि देवि सर्वदे विष्णुवल्लभे।

आगच्छ मम गेहेऽस्मिन् नित्यं सन्निहिता भव॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महाविष्णुं तुलसीं च आवाहयामि।

रत्नसिंहासनं चारु भुक्तिमुक्तिफलप्रदे।
मया दत्तं महादेवि सङ्गृहाण सुरार्चिते॥

आसनं समर्पयामि।

नानागन्धसुपुष्पैश्च वासितं सुरवन्दिते।
पाद्यं गृहाण देवि त्वं सर्वकामफलप्रदे॥

पाद्यं समर्पयामि।

गङ्गोदकं समानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
तुलसि त्वं गृहाणेदं अर्घ्यमैश्वर्यदायकम्॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

सर्वमङ्गलदेवेशि नवरत्नैर्विभूषिते।
मया दत्तमिदं तोयं गृहाणाऽऽचमनीयकम्॥

आचमनीयं समर्पयामि।

पूर्णेन्दुबिम्बसदृशं दधिखण्डघृतं मधु।
मधुपर्कं मयाऽऽनीतं गृहाण परमेश्वरि॥

मधुपर्कं समर्पयामि।

दधिक्षीरघृतं चैव शर्कराफलसंयुतम्।
पञ्चामृतं गृहाण त्वं लोकानुग्रहकारिणि॥

पञ्चामृतं समर्पयामि।

गङ्गायमुनयोस्तोयैरानीतं निर्मलं शुभम्।
शुद्धोदकिमिदं देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

क्षौमं काञ्चनसङ्काशमिदं शुभ्रं मनोहरम्।
वस्त्रयुग्मं शुभे देवि स्वीकुरुष्वाम्बुजेक्षणे॥
वस्त्रं समर्पयामि।

राजतं ब्रह्मसूत्रं च काञ्चनं चोत्तरीयकम्।
गृहाण सर्ववरदे पद्मपत्रनिभेक्षणे॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

किरीटहारकटकान् केयूरान् कुण्डलान् शुभान्।
नूपुरोदरबद्धं च भूषणानि समर्पये॥
आभारणानि समर्पयामि।

चन्दनागरुकस्तूरी कर्पूरैश्च संयुतम्।
विलेपनं ददामि त्वं गृहाण तुलसि शुभे॥
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि।

अक्षतान् धवलान् दिव्यान् शालीयान्स्तण्डुलान् शुभान्।
अक्षतान् चार्पये देवि बृन्दास्थानोद्भवेश्वरि॥
अक्षतान् समर्पयामि।

मल्लिका-कुन्द-मन्दार-जाजी-वकुल-चम्पकैः।
शतपत्रैश्च कल्हारैः पूजयामि महेश्वरि॥

पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ तुलसीदेव्यै नमः — पादौ पूजयामि
२. बृन्दावनस्थायै नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. पद्मपत्रनिभेक्षणायै नमः — जङ्घे पूजयामि
४. पद्मकोटिसमप्रभायै नमः — ऊरू पूजयामि
५. हरिप्रियायै नमः — जानुनी पूजयामि
६. कुङ्कुमाङ्कितगात्रायै नमः — कटिं पूजयामि
७. सुरवन्दितायै नमः — नाभिं पूजयामि
८. लोकानुग्रहकारिण्यै नमः — उदरं पूजयामि
९. त्रैलोक्यजनन्यै नमः — हृदयं पूजयामि
१०. पद्मप्रियायै नमः — हस्तान् पूजयामि
११. इन्दिराख्यायै नमः — भुजान् पूजयामि
१२. कम्बुकण्ठ्यै नमः — कण्ठं पूजयामि
१३. कल्मषघ्न्यै नमः — कर्णौ पूजयामि
१४. वरप्रदायै नमः — मुखं पूजयामि
१५. आश्रितरक्षकायै नमः — शिरः पूजयामि
१६. अभीष्टदायै नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| ॐ श्रीकृष्णाय नमः | ॐ यशोदावत्सलाय नमः |
| ॐ कमलानाथाय नमः | ॐ हरये नमः |
| ॐ वासुदेवाय नमः | ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासि- |
| ॐ सनातनाय नमः | गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः |
| ॐ वसुदेवात्मजाय नमः | ॐ देवकीनन्दनाय नमः |
| ॐ पुण्याय नमः | ॐ श्रीशाय नमः |
| ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः | ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः |
| ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः | ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः |

ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः
 ॐ पूतनाजीवितहराय नमः
 ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः
 ॐ नन्दब्रजजनानन्दिने नमः
 ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
 २०
 ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः
 ॐ नवनीतनटाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ नवनीतनवाहाराय नमः
 ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
 ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
 ॐ त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः
 ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
 ॐ गोविन्दाय नमः
 ॐ योगिनां पतये नमः ३०
 ॐ वत्सवाटचराय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धेनुकासुरमर्दनाय नमः
 ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः
 ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
 ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः
 ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः

ॐ गोपगोपीश्वराय नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः
 ४०
 ॐ इलापतये नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
 ॐ यादवेन्द्राय नमः
 ॐ यदूद्वहाय नमः
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ पीतवाससे नमः
 ॐ पारिजातापहारकाय नमः
 ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
 ॐ गोपालाय नमः
 ॐ सर्वपालकाय नमः ५०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ निरञ्जनाय नमः
 ॐ कामजनकाय नमः
 ॐ कञ्जलोचनाय नमः
 ॐ मधुघ्ने नमः
 ॐ मथुरानाथाय नमः
 ॐ द्वारकानायकाय नमः
 ॐ बलिने नमः
 ॐ बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः

ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः
 ६०
 ॐ स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः
 ॐ नरनारायणात्मकाय नमः
 ॐ कुब्जाकृष्णाम्बरधराय नमः
 ॐ मायिने नमः
 ॐ परमपूरुषाय नमः
 ॐ मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-
 विशारदाय नमः
 ॐ संसारवैरिणे नमः
 ॐ कंसारये नमः
 ॐ मुरारये नमः
 ॐ नरकान्तकाय नमः ७०
 ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः
 ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
 ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः
 ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः
 ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः
 ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः
 ॐ सत्यवाचे नमः
 ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सत्यभामारताय नमः
 ॐ जयिने नमः ८०

ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ जगन्नाथाय नमः
 ॐ वेणुनादविशारदाय नमः
 ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः
 ॐ बाणासुरकरान्तकाय नमः
 ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः
 ॐ बर्हिर्बर्हावतंसकाय नमः ९०
 ॐ पार्थसारथये नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ गीतामृतमहोदधये नमः
 ॐ कालीयफणिमाणिक्य-
 रञ्जितश्रीपदाम्बुजाय नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः
 ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ परब्रह्मणे नमः
 ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः
 १००
 ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपी-

वस्त्रापहारकाय नमः

ॐ पुण्यश्लोकाय नमः

ॐ तीर्थपादाय नमः

ॐ वेदवेद्याय नमः

ॐ दयानिधये नमः

ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः

ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः

ॐ परात्पराय नमः १०८

॥तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

ॐ तुलस्यै नमः

ॐ पावन्यै नमः

ॐ पूज्यायै नमः

ॐ वृन्दावननिवासिन्यै नमः

ॐ ज्ञानदात्र्यै नमः

ॐ ज्ञानमय्यै नमः

ॐ निर्मलायै नमः

ॐ सर्वपूजितायै नमः

ॐ सत्यै नमः

ॐ पतिव्रतायै नमः १०

ॐ वृन्दायै नमः

ॐ क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः

ॐ कृष्णवर्णायै नमः

ॐ रोगहृत्र्यै नमः

ॐ त्रिवर्णायै नमः

ॐ सर्वकामदायै नमः

ॐ लक्ष्मीसख्यै नमः

ॐ नित्यशुद्धायै नमः

ॐ सुदत्यै नमः

ॐ भूमिपावन्यै नमः २०

ॐ हरिद्रान्नैकनिरतायै नमः

ॐ हरिपादकृतालयायै नमः

ॐ पवित्ररूपिण्यै नमः

ॐ धन्यायै नमः

ॐ सुगन्धिन्यै नमः

ॐ अमृतोद्भवायै नमः

ॐ सुरूपायै आरोग्यदायै नमः

ॐ तुष्टायै नमः

ॐ शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः

ॐ देव्यै नमः ३०

ॐ देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः

ॐ कान्तायै नमः

ॐ विष्णुमनःप्रियायै नमः
 ॐ भूतवेतालभीतिघ्न्यै नमः
 ॐ महापातकनाशिन्यै नमः
 ॐ मनोरथप्रदायै नमः
 ॐ मेधायै नमः
 ॐ कान्त्यै नमः
 ॐ विजयदायिन्यै नमः
 ॐ

शङ्खचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः
 ४०

ॐ कामरूपिण्यै नमः
 ॐ अपवर्गप्रदायै नमः
 ॐ श्यामायै नमः
 ॐ कृशमध्यायै नमः
 ॐ सुकेशिन्यै नमः
 ॐ वैकुण्ठवासिन्यै नमः
 ॐ नन्दायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः
 ॐ कोकिलस्वरायै नमः
 ॐ कपिलायै नमः
 ॐ निम्नगाजन्मभूम्यै नमः
 ॐ आयुष्यदायिन्यै नमः
 ॐ वनरूपायै नमः

५०

ॐ दुःखनाशिन्यै नमः
 ॐ अविकारायै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनायै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ दान्तायै नमः
 ॐ विघ्ननिवारिण्यै नमः ६०
 ॐ श्रीविष्णुमूलिकायै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
 ॐ महाशक्त्यै नमः
 ॐ महामायायै नमः
 ॐ
 लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः
 ॐ सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः
 ॐ सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः
 ॐ
 चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः
 ॐ विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः
 ७०
 ॐ उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः
 ॐ सर्वदेवप्रपूजितायै नमः
 ॐ गोपीरतिप्रदायै नमः

ॐ नित्यायै नमः
 ॐ निर्गुणायै नमः
 ॐ पार्वतीप्रियायै नमः
 ॐ अपमृत्युहरायै नमः
 ॐ राधाप्रियायै नमः
 ॐ मृगविलोचनायै नमः
 ॐ अम्लानायै नमः ८०
 ॐ हंसगमनायै नमः
 ॐ कमलासनवन्दितायै नमः
 ॐ भूलोकवासिन्यै नमः
 ॐ शुद्धायै नमः
 ॐ रामकृष्णादिपूजितायै नमः
 ॐ सीतापूज्यायै नमः
 ॐ राममनःप्रियायै नमः
 ॐ नन्दनसंस्थितायै नमः
 ॐ सर्वतीर्थमय्यै नमः
 ॐ मुक्तायै नमः ९०
 ॐ लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः
 ॐ प्रातर्दृश्यायै नमः

ॐ ग्लानिहृत्र्यै नमः
 ॐ वैष्णव्यै नमः
 ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः
 ॐ नारायण्यै नमः
 ॐ सन्ततिदायै नमः
 ॐ मूलमृद्धारिपावन्यै नमः
 ॐ
 अशोकवनिकासंस्थायै नमः
 ॐ सीताध्यातायै नमः १००
 ॐ निराश्रयायै नमः
 ॐ
 गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः
 ॐ कुटिलालकायै नमः
 ॐ अपात्रभक्ष्यपापघ्न्यै नमः
 ॐ दानतोयविशुद्धिदायै नमः
 ॐ श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः
 ॐ शुभायै नमः
 ॐ सर्वेष्टदायिन्यै नमः १०८

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः नानाविध परिमल-पत्र-पुष्पाणि
 समर्पयामि।

॥उत्तराङ्गपूजा॥

गुग्गुलुर्गोघृतं चैव दशाङ्गं सुमनोहरम्।

धूपं गृहाण वरदे सर्वाभीष्टफलप्रदे॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम् षड्रसोपेतं फलसूपसमन्वितम्।

सघृतं समधुक्षीरं गृहाण तुलसीश्वरि॥

- श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं सुमाङ्गल्यं दिव्यज्योतिसमन्वितम्।

अज्ञानघ्ने गृहाण त्वं ज्ञानमार्गप्रदायिनि॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अ॒पां पुष्पम्। पुष्पवान् प्र॒जावान् पशुमान् भवति।

य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व५ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं
प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥
श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥

- स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये।

प्रदक्षिणं करोमि त्वां सर्वाभीष्टफलप्रदे॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं विद्या ज्ञानं यशः सुखम्।

देहि देहि ममाभीष्टं प्रदक्षिणकृतोत्तमे॥

नमस्ते तुलसि देवि सर्वाभीष्टफलप्रदे।

नमस्ते त्रिजगद्वन्द्ये नमस्ते लोकरक्षिके॥

बृन्दावनस्थिते देवि दिव्यभोगप्रदे शुभे।

पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि स्वीकुरुष्वाम्बुजेक्षणे॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।

शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

- श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रं समर्पयामि। चामरं समर्पयामि। गीतं श्रावयामि। व्यजनं
वीजयामि।

नृत्यं दर्शयामि। वाद्यं घोषयामि। आन्दोलिकां समर्पयामि।

अश्वान् आरोपयामि। गजान् आरोपयामि।

समस्त राजोपचारान् समर्पयामि।

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त
एवङ्गुण विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभतिथौ अद्य
कृत महाविष्णु-तुलसी-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं पायसपात्रदानं च
करिष्ये॥

तुलस्यै तु नमस्तुभ्यं नमस्ते फलदायिनि।

इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

-तुलस्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

लक्ष्मीपतिप्रिये देवि तुलसि दिव्यरूपिणि।

इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

-तुलस्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

सर्वपापहरे देवि आश्रिताभीष्टदायिनि।

मया दत्तं गृहाणेदं सुप्रीता वरदा भव॥

-तुलस्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।
अनेन अर्घ्यप्रदानेन श्री महाविष्णु-तुलसी प्रीयेताम्॥

॥प्रार्थना॥

देहि मे विजयं देहि विद्यां देहि महेश्वरि।
त्वामिति प्रार्थये नित्यं शीघ्रमेव फलं कुरु॥

॥पायसपात्रदानम्॥

श्री महाविष्णु-तुलसी-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्। गन्धादि
सकलाराधनैः स्वर्चितम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

बृन्दावन-द्वादशी-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णु-तुलसी-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं
हिरण्यं इदम् सपायसं पात्रम् सदक्षिणाकं सताम्बूलं श्री
महाविष्णु-तुलसी-प्रीतिम् कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री महाविष्णु-तुलसी
प्रीयेताम्।

॥विसर्जनम्॥

यस्य स्मृत्या च नामोत्तया तपः पूजा क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री महाविष्णु-तुलसीं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
अनया पूजया श्री महाविष्णु-तुलसी प्रीयेताम्।
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥बृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु पूजा)॥

॥पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा — तुलसी-पूजा॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवुरोम्।

शुक्लाम्बरधरं + शान्तये + श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे + तिथौ
तुलसी महाविष्णु प्रसादसिद्ध्यर्थं तुलसी महाविष्णुपूजां करिष्ये
। इति संकल्प्य विघ्नेशमुद्वास्य कलशपूजां कृत्वा, तुलसी
विष्णुं च ध्यायेत्।

॥सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां
प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये शार्वरि-नाम संवत्सरे
दक्षिणायने शरद्-ऋतौ वृश्चिक-मासे कृष्ण-पक्षे द्वादश्यां
शुभतिथौ गुरु-वासरयुक्तायां स्वाती-नक्षत्रयुक्तायाम्
सिद्धि(►०७:३०)/ व्यतीपात-योगयुक्तायां बव-करणयुक्तायाम्
एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि

पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां
 ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
 प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
 सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति
 ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये।
 तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
 ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
 सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
 नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।
 (अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
 मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
 गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
 प्रसन्नवदनाम्भोजां वरदामभयप्रदाम्॥

तुलसीं ध्यायामि

ध्यायामि विष्णुं वरदं तुलसीप्रियवल्लभम्।
 पीताम्बरं पद्मनेत्रं वासुदेवं वरप्रदम्॥

महाविष्णुं ध्यायामि।

वासुदेव प्रिये देवि सर्वदेव स्वरूपिणि।
 आगच्छ पूजाभवने सदा सन्निहिता भव॥
 आगच्छागच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते।
 क्रियमाणां मया पूजां वासुदेव गृहाण भोः॥
 -तुलसीविष्णू आवाहयामि

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
 आसनं कृपया विष्णो तुलसि प्रतिगृह्यताम्॥
 तुलसी विष्णुभ्यां नमः - आसनं समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो वासुदेव मया हतम्।
 तोयमेतत्सुखस्पर्श पादार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
 नानानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
 पाद्यं गृहाण तुलसि पापं मे विनिवारय॥

(पाद्यं)

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते कमलापते।
 नमस्ते सर्वविनुत गृहाणायै नमोऽस्तु ते॥
 अयं गृहाण देवि त्वं अच्युतप्रियवल्लभे।
 अक्षतादिसमायुक्तं अक्षय्यफलदायिनि॥

(अर्घ्यं)

कर्पूरवासितं तोयं गङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
 आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं च भक्तितः॥

गृहाणाचमनार्थाय विष्णुवक्षः स्थलालये।
स्वच्छं तोयमिदं देवि सर्वपापविनाशिनि ॥

(आचमनीयम्)

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्।
गृहाण विष्णो वरद लक्ष्मीकान्त नमोऽस्तु ते॥

मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्लभे।
मधुदध्याज्य संयुक्तं महापापविनाशिनि ॥

(मधुपर्कं)

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम्।
पञ्चामृतं गृहाणेदं भक्तानामिष्टदायक॥

पञ्चामृतं गृहाणेदं पञ्चपातकनाशिनि ।
दधिक्षीरसमायुक्तं दामोदरकुटुम्बिनि॥

(पञ्चामृतम्)

गङ्गा कृष्णा च यमुना नर्मदा च सरस्वती।
तुङ्गा गोदावरी वेणी क्षिप्रा सिन्धुर्घटप्रभा॥
तापी पयोष्णी सरयूस्ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानीयं गृह्यतां हरे ॥

गङ्गागोदावरीकृष्णातुङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
सलिलं देवि तुलसि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

(स्नानं)

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
वाससी प्रतिगृह्णातु लक्ष्मीजानिरधोक्षजः॥

पीताम्बरमिदं दिव्यं पातकव्रजनाशिनि।
पीताम्बरप्रिये देवि परिधत्स्व परात्परे॥

(वस्त्रम्)

भूषणानि वराहाणि गृहीतं तुलसीश्वर।
किरीटहारकेयूरकटकानि हरेऽमृते॥

(आभरणानि)

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्।
गन्ध स्वीकुरुतं देवौ रमेशहरिवल्लभे॥

(गन्धान्)

मल्लिकाकुन्दमन्दारजाजीवकुल चम्पकैः।
शतपत्रैश्च कल्हारैः अर्चये तुलसीहरी॥

(पुष्पाणि)

॥ अङ्गपूजा ॥

| | | |
|------------------|--------------------|--------------------------|
| बृन्दायै | अच्युताय नमः | - पादौ पूजयामि। |
| अनन्ताय | नमः - | गुल्फो पूजयामि। |
| जनार्दनप्रियायै | तुलसीकान्ताय नमः | - जचे पूजयामि। |
| जन्मनाशिन्यै | गङ्गाधरपदाय नमः | - जानुनी पूजयामि |
| उत्तमायै | - ऊरू | पूजयामि। |
| कमलाक्ष्यै | कमलाक्षाय नमः | - कटिं पूजयामि। |
| नारायण्यै | नारायणाय नमः | - नाभिं पूजयामि। |
| उन्नतायै | उन्नताय नमः | - उदरं पूजयामि। |
| वरदायै | वरदाय नमः | - वक्षः पूजयामि। |
| स्तव्यायै | स्तव्याय नमः | - स्तनौ कौस्तुभं पूजयामि |
| चतुर्भुजायै | चतुर्भुजाय नमः | - भुजान् पूजयामि। |
| कम्बुकण्ठ्यै | वनमालिने नमः | - कण्ठं पूजयामि। |
| कल्मषघ्न्यै | कल्मषनाय नमः | - कणौ पूजयामि । |
| मुनिप्रियायै | मुनिप्रियाय नमः | - नेत्रे पूजयामि |
| शुभप्रदायै | शुभप्रदाय नमः | - शिरः पूजयामि। |
| सर्वार्थदायिन्यै | सर्वार्थदायिने नमः | - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि |

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-------------------|--------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | ४. ॐ गोविन्दाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | ५. ॐ विष्णवे नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | ६. ॐ मधुसूदनाय नमः |

| | |
|------------------------|------------------------|
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| १४. ॐ वासुदेवाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः॥

| | |
|--------------------------|-----------------------------|
| ॐ तुलस्यै नमः | ॐ क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः |
| ॐ पावन्यै नमः | ॐ कृष्णवर्णायै नमः |
| ॐ पूज्यायै नमः | ॐ रोगहन्त्र्यै नमः |
| ॐ वृन्दावननिवासिन्यै नमः | ॐ त्रिवर्णायै नमः |
| ॐ ज्ञानदात्र्यै नमः | ॐ सर्वकामदायै नमः |
| ॐ ज्ञानमय्यै नमः | ॐ लक्ष्मीसख्यै नमः |
| ॐ निर्मलायै नमः | ॐ नित्यशुद्धायै नमः |
| ॐ सर्वपूजितायै नमः | ॐ सुदत्यै नमः |
| ॐ सत्यै नमः | ॐ भूमिपावन्यै नमः २० |
| ॐ पतिव्रतायै नमः १० | ॐ हरिद्वान्नैकनिरतायै नमः |
| ॐ वृन्दायै नमः | ॐ हरिपादकृतालयायै नमः |

ॐ पवित्ररूपिण्यै नमः
 ॐ धन्यायै नमः
 ॐ सुगन्धिण्यै नमः
 ॐ अमृतोद्भवायै नमः
 ॐ सुरूपायै आरोग्यदायै नमः
 ॐ तुष्टायै नमः
 ॐ शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः
 ॐ देव्यै नमः ३०
 ॐ देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः
 ॐ कान्तायै नमः
 ॐ विष्णुमनःप्रियायै नमः
 ॐ भूतवेतालभीतिघ्न्यै नमः
 ॐ महापातकनाशिण्यै नमः
 ॐ मनोरथप्रदायै नमः
 ॐ मेधायै नमः
 ॐ कान्त्यै नमः
 ॐ विजयदायिण्यै नमः
 ॐ
 शङ्खचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः
 ४०
 ॐ कामरूपिण्यै नमः
 ॐ अपवर्गप्रदायै नमः
 ॐ श्यामायै नमः

ॐ कृशमध्यायै नमः
 ॐ सुकेशिण्यै नमः
 ॐ वैकुण्ठवासिण्यै नमः
 ॐ नन्दायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः
 ॐ कोकिलस्वरायै नमः
 ॐ कपिलायै नमः ५०
 ॐ निम्नगाजन्मभूम्यै नमः
 ॐ आयुष्यदायिण्यै नमः
 ॐ वनरूपायै नमः
 ॐ दुःखनाशिण्यै नमः
 ॐ अविकारायै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनायै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ दान्तायै नमः
 ॐ विघ्ननिवारिण्यै नमः ६०
 ॐ श्रीविष्णुमूलिकायै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ त्रिवर्गफलदायिण्यै नमः
 ॐ महाशक्त्यै नमः
 ॐ महामायायै नमः
 ॐ

लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः
 ॐ सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः
 ॐ सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः
 ॐ
 चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः
 ॐ विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः
 ७०
 ॐ उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः
 ॐ सर्वदेवप्रपूजितायै नमः
 ॐ गोपीरतिप्रदायै नमः
 ॐ नित्यायै नमः
 ॐ निर्गुणायै नमः
 ॐ पार्वतीप्रियायै नमः
 ॐ अपमृत्युहरायै नमः
 ॐ राधाप्रियायै नमः
 ॐ मृगविलोचनायै नमः
 ॐ अम्लानायै नमः ८०
 ॐ हंसगमनायै नमः
 ॐ कमलासनवन्दितायै नमः
 ॐ भूलोकवासिन्यै नमः
 ॐ शुद्धायै नमः
 ॐ रामकृष्णादिपूजितायै नमः
 ॐ सीतापूज्यायै नमः
 ॐ राममनःप्रियायै नमः

ॐ नन्दनसंस्थितायै नमः
 ॐ सर्वतीर्थमय्यै नमः
 ॐ मुक्तायै नमः ९०
 ॐ लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः
 ॐ प्रातर्दृश्यायै नमः
 ॐ ग्लानिहत्र्यै नमः
 ॐ वैष्णव्यै नमः
 ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः
 ॐ नारायण्यै नमः
 ॐ सन्ततिदायै नमः
 ॐ मूलमृद्धारिपावन्यै नमः
 ॐ
 अशोकवनिकासंस्थायै नमः
 ॐ सीताध्यातायै नमः १००
 ॐ निराश्रयायै नमः
 ॐ
 गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः
 ॐ कुटिलालकायै नमः
 ॐ अपात्रभक्ष्यपापघ्न्यै नमः
 ॐ दानतोयविशुद्धिदायै नमः
 ॐ श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः
 ॐ शुभायै नमः
 ॐ सर्वेष्टदायिन्यै नमः १०८

श्री महाविष्णु-तुलसी-देव्यै नमः नानाविध परिमल-पत्र-पुष्पाणि
समर्पयामि।

धूपं गृहाण वरदे दशाङ्गेन सुवासितम्।
तुलस्यमृतसंभूते धूतपापे नमोऽस्तु ते॥
दशाङ्गो गुग्गुलूपेतः सुगन्धः सुननोहरः ।
श्रीवत्साह हृषीकेश धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

(धूपः)

वर्तित्रय युतं दीप्तं गोघृतेन समन्वितम्।
दीपं देवि गृहाणेमं दैत्यारिहृदयस्थिते॥
साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं दीप्तं देव जनार्दन।
गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरं हर॥

(दीपः)

नानाभक्ष्यैश्च भोज्यैश्च फलैः क्षीरघृतादिभिः ।
नैवेद्यं गृह्यतां युक्तं नारायणमनःप्रिये॥

भोज्यं चतुर्विधं चोष्यभक्ष्यसूपफलैर्युतम्।
दधिमध्वाज्यसंयुक्तं गृह्यतामंबुजेक्षण॥

(महानैवेद्यं)

कर्पूरचूर्णताम्बूलवल्लीपूगफलैर्युतम् ।
जगतः पितरावेतत्ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

(ताम्बूलं)

नीराजनं गृहाणेदं कर्पूरैः कलितं मया।
 तुलस्थमृतसंभूते गृहाण हरिवल्लभे॥
 चन्द्रादित्यौ च नक्षत्रं विद्युदग्निस्त्वमेव च।
 त्वमेव सर्वज्योतींषि कुर्या नीराजनं हरे॥

(नीराजनं)

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये।
 युवां प्रदक्षिणी कुर्वे तुलसीशौ प्रसीदतम्॥

(प्रदक्षिणं)

नमोऽस्तु पीयूष समुद्भवायै नमोऽस्तु पद्माक्षमनः प्रियायै।
 नमोऽस्तु जन्माप्यय भीतिहृत्र्यै नमस्तुलस्यै जगतां जनन्यै॥

शखचक्रगदापाणेद्वारकानिलयाच्युत ।
 गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥

(नमस्कारान्)

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेदं पङ्कजाक्षस्य वल्लभे।
 नमस्ते देवि तुलसि नताभीष्टफलप्रदे॥

भन्दारनीलोत्पलकुन्दजाती पुन्नागमल्लीकरवीरपद्मः।
 पुष्पाञ्जलिं ते जगदेकबन्धो हरे त्वदछौ विनिवेशयामि॥

(मन्त्रपुष्पाञ्जलिं)

आयुरारेग्यमतुलमैश्वर्यं पुत्रसंपदः।
 देहि मे सकलान्कामान् तुलस्यमृतसंभवे॥

नमो नमः सुखवरपूजिताङ्गे
 नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
 नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये
 नमो नमः परमदयानिधे हरे॥

(प्रार्थनां)

नमस्ते देवि तुलसि नमस्ते मोक्षदायिनि।
 इदमयं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥
 लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं तुलसीदामभूषण।
 इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गरुडध्वज॥

श्री तुलस्यै महाविष्णवे च नमः - इद मयमिद मर्घ्यमिदमयम्
 (एवं त्रिः)

नमस्ते देवि तुलसि माधवेन समन्विता।
 प्रयच्छ सकलान्कामान् द्वादश्यां पूजिता मया॥
 कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन श्री-म्हाविष्णु-तुलसी प्रीयेताम्।
 ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥तुलसीविवाहविधिः॥

(इक्षुदण्डनिर्मिते पुष्पाधलङ्कृते मण्डपे विवाहः ।

तुलसी हरिद्राचन्दनकुखमपुष्पाद्यालङ्कृता स्वीयद्यां प्रथमं पूज्यते।

शुक्लाम्बरधरं + परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते + शुभतिथौ
तुलस्याः विष्णुना सह विवाहोत्सवमाचरिष्ये।

(अप उपस्पृश्य)

विष्णुं विवाहार्थे वराह वस्त्रालङ्करण पुष्पमालादिभिः अलङ्कृत्य
वाद्यघोषगीतपुरस्सरं विवाहमण्डपमानीय कर्ता
नारिकेल-कदलीफलताम्बूलादिभिः उपसृत्य मण्डपे आसने
प्रतिष्ठाप्य प्रार्थयेत्।

आगच्छ भगवन् देव अर्हयिष्यामि केशव।

तुभ्यं ददामि तुलसी प्रतीच्छन् कामदो भव॥

आसनमिदं, अलनियताम्। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि।

हरिद्रालेप-मङ्गलविधि समर्पयामि। तैलाभ्यापूर्वकं मालसानं
समर्पयामि। बसालङ्करणपुष्पमालाः समर्पयामि। गन्धान्
धारयामि। गन्धोपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

नामभिरर्चयेत्।

(वधूवरौ परस्परमभिमुखौ स्थापयित्वा)

... गोत्रोद्भवां शर्मणः प्रपौत्री, ... शर्मणः पौत्री, शर्मणः

पुर्जी तुलसीनानी इमां कन्यकां अजाय अनादये श्री
विष्णदेवराय ददामि। (निरुक्ता)

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्य प्रतिपालक।
इमां गृहाण तुलसी विवाह विधिनेश्वर॥

पार्वती बीजसंभूतां बन्दाभस्मनि संस्थिताम्।
अनादिमध्यनिधनांवल्लभां ते ददाम्यहम्॥

पयोधृतश्च सेवाभिः कन्यावर्धितां मया।
त्वत्प्रियां तुलसी तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥

वाद्यघोष-वेदस्वस्तिवाचन-मङ्गलाशीर्भिः उभौ मेलयित्वा
गीतादिभिः सन्तोषयेत्।

सायमपि पुनः पूजां कृत्वा स्त्रीधनं यथाशक्तिं दद्यात्।

विवाहोत्सवपूर्ती वैकुण्ठं गच्छ भगवन् तुलस्या सहितः प्रभो।
मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।

यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ जनार्दन॥

इति उभौ अभ्यनुज्ञापयेत् मङ्गलारार्तिकेन सह। तुलसी यथापूर्वं
रक्षेत्।



॥शिवरत्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा॥

आचम्य।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥व्रत-सङ्कल्पः॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये ()^{१९} नाम
संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु /
स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२०} नक्षत्र ()^{२१} नाम योग ()
करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
(त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च

^{१९}पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^{२०}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{२१}पृष्ठं २२० पश्यताम्

सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
सकल पापक्षयार्थं श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शिवरात्रि-व्रतं
करिष्ये।

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम्।
निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाञ्जगत्पते॥
चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शम्भो परेऽहनि।
भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर॥

॥पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥
अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।
 ताम्बूलं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (प्रथम-यामः)॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
 मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
 अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
 भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
 व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये ()^{२२} नाम
 संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु /

स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२३} नक्षत्र ()^{२४} नाम योग ()
) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
 (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
 क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
 धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
 इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
 सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
 सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं
 प्रथमयामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

^{२३}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{२४}पृष्ठं २२० पश्यताम्

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा भू॒तान्यापः प्रा॒णा वा आपः प॒शव॒
आपोऽन्न॑मापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो वि॒राडापः
स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो ज्योती॑ऽप्यापो यजू॑ऽप्यापः स॒त्यमापः

सर्वा दे॒वता॒ आपो भूर्भुवः सुव॒राप॒ ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।

आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥आत्मपूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषुवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने
बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।
या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव
तया नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो
नमः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तया नस्तनुवा
शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे
भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा
हिंसीः पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥
अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः
सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च
सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय
नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमाः रुद्रा
अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषस्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं
तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ
उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं
तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं
तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं
तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

अ॒सौ योऽव॒सर्प॑ति॒ नील॑ग्रीवो॒ विलो॑हितः। उ॒तैनं॑ गो॒पा
 अ॒दृश॑न्न॒दृश॑न्नुद॒हार्यः॑। उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॑तानि॒ स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः॥
 ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। रु॒द्राय॑ नमः॑। व॒स्रोत्त॑रीयं॒ सम॑र्पयामि॥८॥
 नमो॑ अस्तु॒ नील॑ग्रीवाय॒ सह॑स्रा॒क्षाय॑ मी॒दुषे॑। अथो॒ ये अ॑स्य॒
 स॒त्वा॒नोऽहं॑ तेभ्योऽकरं॒ नमः॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। का॒लाय॑
 नमः॑। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्वमु॑भयो॒रार्त्तियो॑र्ज्याम्। याश्च॑ ते ह॒स्त इ॑षवः॒ परा॑
 ता भ॑गवो वप॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। क॒ल॒वि॒कर॑णाय॒ नमः॑।
 दि॒व्य॒परि॒मल॑गन्धान् धा॒रयामि॑। गन्ध॑स्योपरि॒ अक्ष॑तान्
 सम॑र्पयामि॥१०॥

अ॒व॒त॒त्य ध॑नु॒स्त्व॑ सह॑स्राक्ष॒ शते॑षुधे। नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॑ मु॒खा
 शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। ब॒ल॒वि॒कर॑णाय॒
 नमः॑। पु॒ष्पैः पू॒जयामि॑॥११॥

ॐ भ॒वाय॑ दे॒वाय॑ नमः॑। ॐ श॒र्वाय॑ दे॒वाय॑ नमः॑।

ॐ ई॒शाना॑य दे॒वाय॑ नमः॑। ॐ प॒शुप॑तये दे॒वाय॑ नमः॑।

ॐ रु॒द्राय॑ दे॒वाय॑ नमः॑। ॐ उ॒ग्राय॑ दे॒वाय॑ नमः॑।

ॐ भी॒माय॑ दे॒वाय॑ नमः॑। ॐ म॒ह॒ते दे॒वाय॑ नमः॑॥

ॐ भ॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै नमः॑। ॐ श॒र्वस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै नमः॑।

ॐ ई॒शान॑स्य दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै नमः॑। ॐ प॒शुप॑तेर्दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै नमः॑।

ॐ रु॒द्रस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै नमः॑। ॐ उ॒ग्रस्य॑ दे॒वस्य॑ प॒त्न्यै नमः॑।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

| | | |
|---------------------|-----------------------|----|
| ॐ शिवाय नमः | ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० |
| ॐ महेश्वराय नमः | ॐ शितिकण्ठाय नमः | |
| ॐ शम्भवे नमः | ॐ शिवाप्रियाय नमः | |
| ॐ पिनाकिने नमः | ॐ उग्राय नमः | |
| ॐ शशिशेखराय नमः | ॐ कपालिने नमः | |
| ॐ वामदेवाय नमः | ॐ कामारये नमः | |
| ॐ विरूपाक्षाय नमः | ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | |
| ॐ कपर्दिने नमः | ॐ गङ्गाधराय नमः | |
| ॐ नीललोहिताय नमः | ॐ ललाटाक्षाय नमः | |
| ॐ शङ्कराय नमः | ॐ कालकालाय नमः | १० |
| ॐ शूलपाणिने नमः | ॐ कृपानिधये नमः | ३० |
| ॐ खट्वाङ्गिने नमः | ॐ भीमाय नमः | |
| ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | ॐ परशुहस्ताय नमः | |
| ॐ शिपिविष्टाय नमः | ॐ मृगपाणये नमः | |
| ॐ अम्बिकानाथाय नमः | ॐ जटाधराय नमः | |
| ॐ श्रीकण्ठाय नमः | ॐ कैलासवासिने नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | ॐ कवचिने नमः | |
| ॐ भवाय नमः | ॐ कठोराय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | |

ॐ वृषाङ्गाय नमः
 ॐ वृषभारूढाय नमः ४०
 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ॐ सामप्रियाय नमः
 ॐ स्वरमयाय नमः
 ॐ त्रयीमूर्तये नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ यज्ञमयाय नमः ५०
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः
 ॐ विश्वेश्वराय नमः
 ॐ वीरभद्राय नमः
 ॐ गणनाथाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यरेतसे नमः
 ॐ दुर्धर्षाय नमः
 ॐ गिरीशाय नमः ६०
 ॐ गिरिशाय नमः

ॐ अनघाय नमः
 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः
 ॐ भर्गाय नमः
 ॐ गिरिधन्वने नमः
 ॐ गिरिप्रियाय नमः
 ॐ कृत्तिवाससे नमः
 ॐ पुरारातये नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ७०
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
 ॐ जगद्ध्यापिने नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ व्योमकेशाय नमः
 ॐ महासेनजनकाय नमः
 ॐ चारुविक्रमाय नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ भूतपतये नमः
 ॐ स्थाणवे नमः ८०
 ॐ अहये बुध्याय नमः
 ॐ दिगम्बराय नमः
 ॐ अष्टमूर्तये नमः
 ॐ अनेकात्मने नमः

| | | |
|----------------------|---------------------|-----|
| ॐ सात्त्विकाय नमः | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ खण्डपरशवे नमः | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ अजाय नमः | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ पाशविमोचकाय नमः १० | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ मृडाय नमः | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ पशुपतये नमः | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ देवाय नमः | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ महादेवाय नमः | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ अव्ययाय नमः | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ हरये नमः | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा५ उत। अनेशत्रस्येषव
आभुरस्य निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः।
धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्तं बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्
विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥ नमस्ते
 अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवे॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव
 धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सर्वभूतदमनाय नमः। ()
 निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
 अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
 निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य
 इषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धैहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
 मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय
 त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकांलाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय
 मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥
 कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥रक्षा॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्।
 इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
 रक्षां धारयामि॥

॥नमस्काराः॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ
ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः।
महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने
नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भव नमः। शूलिने नमः।
महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
प्रथम-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिवतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च।
शिवरात्रौ मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मम प्रभो॥१॥

॥पूजानिवेदनम्॥

नमो यज्ञजगन्नाथ नमस्त्रिभुवनेश्वर।
पूजां गृहाण मे दत्तां महेश प्रथमे पदे॥१॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुक्त्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इतिप्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति
ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

॥प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (द्वितीय-यामः)॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ट्याः संवत्सराणां मध्ये ()^{२५} नाम
संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु /
स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२६} नक्षत्र ()^{२७} नाम योग ()
करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
(त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा

^{२५}पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^{२६}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{२७}पृष्ठं २२० पश्यताम्

सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं
प्रथमयामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव

आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः

स्वराडापश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः ष्यापो यजूः ष्यापः सत्यमापः

सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप् ओम्॥
 कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
 मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने
बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त॒ इषुः शि॒वत॑मा शि॒वं ब॒भूव॑ ते ध॒नुः। शि॒वा श॑र॒व्या या तव॑
तया॑ नो रु॒द्र मृ॒डय॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। स॒द्योजा॑ताय॒ वै नमो॑
नमः॑। आ॒सनं॑ स॒मर्प॑यामि॥२॥

या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॒नूर॑घो॒राऽपा॑पकाशिनी। तया॑ नस्त॒नुवा
श॒न्त॑मया॒ गिरि॑श॒न्ताभि॑चा॒कशी॑हि॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। भ॒वे
भ॒वे ना॑ति॒ भवे॑ भवस्व॒ माम्। पा॒दयोः॑ पा॒द्यं स॒मर्प॑यामि॥३॥

यामिषुं॑ गिरि॒शन्त॑ ह॒स्ते बि॒भर्ष्य॑स्त॒वे। शि॒वां गिरि॑त्र तां कु॒रु मा
हि॑ः॒सीः पु॒रुषं॑ जग॑त्॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॑॥
अ॒र्घ्यं स॒मर्प॑यामि॥४॥

शि॒वेन॑ वच॑सा त्वा॒ गिरि॑शाच्छा॒वदाम॑सि। यथा॑ नः
सर्व॑मि॒ज्जग॑दय॒क्ष्मं सु॑म॒ना अ॑स॒त्॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑।
वा॒मदे॒वाय॒ नमः॑। आ॒चम॑नीयं स॒मर्प॑यामि॥५॥

अ॒ध्य॒वोच॑दधि॒वृक्ता प्र॑थ॒मो दै॒व्यो भि॑षक्। अ॒हींश्च॒
सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॑न्त्सर्वा॑श्च यातु॒धान्यैः॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। ज्ये॒ष्ठाय॒
नमः॑। म॒धुपर्कं॑ स॒मर्प॑यामि॥६॥

अ॒सौ यस्ता॒म्रो अ॑रु॒ण उ॑त ब॒भ्रुः सु॑म॒ङ्गलः॑। ये चे॒मां रु॒द्रा
अ॒भितो॑ दि॒क्षु श्रि॑ताः स॒हस्र॑शोऽवै॒षां हे॒ड ई॒महे॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः
शि॒वाय॑। श्रे॒ष्ठाय॒ नमः॑। स्ना॒नं स॒मर्प॑यामि।

रु॒द्रम्। च॒मक॑म्। पु॒रुष॑स्त॒म्॥

स्ना॒नान॑न्तरम् आ॒चम॑नीयं स॒मर्प॑यामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

अ॒सौ योऽव॒सर्प॑ति॒ नील॑ग्री॒वो विलो॑हितः। उ॒तैनं॑ गो॒पा
अ॒दृश॑न्न॒दृश॑न्नुद॒हार्यः॑। उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॑तानि॒ स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः॥
ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। रु॒द्राय॑ नमः॑। व॒स्रोत्तरी॑यं समर्पयामि॥८॥
नमो॑ अस्तु नील॑ग्री॒वाय॑ सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒दुषे॑। अथो॒ ये अ॑स्य॒
सत्वा॑नोऽहं तेभ्योऽकरं॑ नमः॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। का॒लाय॑
नमः॑। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मु॑ञ्च धन्वं॒नस्त्वमु॑भयो॒रार्त्तियो॒ज्याम्। याश्च॑ ते ह॒स्त इष॑वः॒ परा॑
ता भ॑गवो वप॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। कल॑विकर॒णाय॑ नमः॑।
दिव्य॑परिमलगन्धान् धारयामि। गन्ध॑स्योपरि अक्ष॑तान्
समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व९ सहस्राक्ष शतैषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखां
 शिवो नः सुमनां भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय
 नमः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

ॐ शिवाय नमः

ॐ महेश्वराय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ पिनाकिने नमः

ॐ शशिशेखराय नमः

ॐ वामदेवाय नमः

ॐ विरूपाक्षाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

ॐ नीललोहिताय नमः

ॐ शङ्कराय नमः

ॐ शूलपाणिने नमः

ॐ खट्वाङ्गिने नमः

ॐ विष्णुवल्लभाय नमः

ॐ शिपिविष्टाय नमः

ॐ अम्बिकानाथाय नमः

ॐ श्रीकण्ठाय नमः

ॐ भक्तवत्सलाय नमः

| | | | |
|-----------------------|----|----------------------------|----|
| ॐ भवाय नमः | | ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | | ॐ सामप्रियाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० | ॐ स्वरमयाय नमः | |
| ॐ शितिकण्ठाय नमः | | ॐ त्रयीमूर्तये नमः | |
| ॐ शिवाप्रियाय नमः | | ॐ अनीश्वराय नमः | |
| ॐ उग्राय नमः | | ॐ सर्वज्ञाय नमः | |
| ॐ कपालिने नमः | | ॐ परमात्मने नमः | |
| ॐ कामारये नमः | | ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | | ॐ हविषे नमः | |
| ॐ गङ्गाधराय नमः | | ॐ यज्ञमयाय नमः | ५० |
| ॐ ललाटाक्षाय नमः | | ॐ सोमाय नमः | |
| ॐ कालकालाय नमः | | ॐ पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ॐ कृपानिधये नमः | ३० | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ भीमाय नमः | | ॐ विश्वेश्वराय नमः | |
| ॐ परशुहस्ताय नमः | | ॐ वीरभद्राय नमः | |
| ॐ मृगपाणये नमः | | ॐ गणनाथाय नमः | |
| ॐ जटाधराय नमः | | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ कैलासवासिने नमः | | ॐ हिरण्यरेतसे नमः | |
| ॐ कवचिने नमः | | ॐ दुर्धर्षाय नमः | |
| ॐ कठोराय नमः | | ॐ गिरीशाय नमः | ६० |
| ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | | ॐ गिरिशाय नमः | |
| ॐ वृषाङ्गाय नमः | | ॐ अनघाय नमः | |
| ॐ वृषभारूढाय नमः | ४० | ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | |

ॐ भर्गाय नमः
 ॐ गिरिधन्वने नमः
 ॐ गिरिप्रियाय नमः
 ॐ कृत्तिवाससे नमः
 ॐ पुरारातये नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ७०
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
 ॐ जगद्धापिने नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ व्योमकेशाय नमः
 ॐ महासेनजनकाय नमः
 ॐ चारुविक्रमाय नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ भूतपतये नमः
 ॐ स्थाणवे नमः ८०
 ॐ अहये बुध्याय नमः
 ॐ दिगम्बराय नमः
 ॐ अष्टमूर्तये नमः
 ॐ अनेकात्मने नमः
 ॐ सात्त्विकाय नमः
 ॐ शुद्धविग्रहाय नमः

ॐ शाश्वताय नमः
 ॐ खण्डपरशवे नमः
 ॐ अजाय नमः
 ॐ पाशविमोचकाय नमः ९०
 ॐ मृडाय नमः
 ॐ पशुपतये नमः
 ॐ देवाय नमः
 ॐ महादेवाय नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ हरये नमः
 ॐ पूषदन्तभिदे नमः
 ॐ अव्यग्राय नमः
 ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
 ॐ हराय नमः १००
 ॐ भगनेत्रभिदे नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ सहस्रपदे नमः
 ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ तारकाय नमः
 ॐ परमेश्वराय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव
आभुरस्य निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः।
धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्तं बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्
विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते
अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव
धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सर्वभूतदमनाय नमः। ()
निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परिं ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य
इषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय

त्रिपुरान्त॒कायं॑ त्रिका॒ग्निका॒लाय॑ काला॒ग्निरु॒द्राय॑ नीलक॒ण्ठाय॑
 मृत्युञ्ज॒याय॑ सर्वेश्व॒राय॑ सदाशि॒वाय॑ श्रीमन्महादे॒वाय॑ नमः॥
 कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥रक्षा॥

बृ॒ह॒त्सामं॑ क्षत्र॒भृद्वृ॒द्ध वृ॑ष्णि॒यं त्रि॑ष्टु॒भौजः॑ शु॒भित॑मु॒ग्रवी॑रम्।
 इन्द्र॒स्तोमे॑न पञ्चद॒शेन॑ म॒ध्यमि॑दं वाते॒न स॑गरेण रक्ष॥
 रक्षां धारयामि॥

॥नमस्काराः॥

ॐ भवाय देवाय नमः।
 ॐ शर्वाय देवाय नमः।
 ॐ ईशानाय देवाय नमः।
 ॐ पशुपतये देवाय नमः।
 ॐ रुद्राय देवाय नमः।
 ॐ उग्राय देवाय नमः।
 ॐ भीमाय देवाय नमः।
 ॐ महते देवाय नमः॥

ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॑नामीश्वरः सर्व॒भूता॑नां
 ब्रह्माधि॑पतिर्ब्रह्म॒णोऽधि॑पतिर्ब्रह्मा॒ शिवो॑ मे॒ अस्तु॑ सदाशि॒वोम्॥ ॐ
 ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः।
 महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने
 नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भव नमः। शूलिने नमः।
 महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
 द्वितीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिवतं देव पूजाजपपरायणः।
 करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्वा।

मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर।
 गृहाणार्घ्यमुमाकान्त शिवरात्रौ प्रसीद मे॥२॥

॥पूजानिवेदनम्॥

पूर्वे नन्दि महाकालौ गणभृङ्गी च दक्षिणे।
 वृषस्कन्दौ पश्चिमे ते देशकालौ तथोत्तरे।
 गङ्गा च यमुना पार्श्वे पूजां गृह्ण नमोऽस्तुते॥२॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
 तन्मे शिवपदस्थस्य भुक्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
 शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इतिप्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति
ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

॥प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (तृतीय-यामः)॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये ()^{२८} नाम

संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु /
 स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२९} नक्षत्र ()^{३०} नाम योग ()
) करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
 (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
 क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
 धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
 इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
 सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
 सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं
 प्रथमयामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

^{२९}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{३०}पृष्ठं २२० पश्यताम्

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।
(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)
आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा भू॒तान्यापः प्रा॒णा वा आपः प॒शव॑
आपोऽन्न॒मापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः
स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो॑ ज्योती॒ऽप्यापो॑ यजू॒ऽप्यापः॑ स॒त्यमापः॑

सर्वा दे॒वता॒ आपो॑ भूर्भुवः सुव॒राप॑ ओम्॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥आत्मपूजा॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषुवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने
बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।
या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव
तया नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो
नमः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी। तया नस्तनुवा
शन्तमया गिरिशन्ताभिचां कशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे
भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा
हिंसीः पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥
अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः
सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च
सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय
नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमाः रुद्रा
अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषस्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं
तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ
उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं
तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं
तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं
तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽव्सर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा
 अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः। उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥
 ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥
 नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य
 सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय
 नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्तियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा
 ता भगवो वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान्
 समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा
 शिवो नः सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय
 नमः। पुष्पैः पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

| | | |
|---------------------|-----------------------|----|
| ॐ शिवाय नमः | ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० |
| ॐ महेश्वराय नमः | ॐ शितिकण्ठाय नमः | |
| ॐ शम्भवे नमः | ॐ शिवाप्रियाय नमः | |
| ॐ पिनाकिने नमः | ॐ उग्राय नमः | |
| ॐ शशिशेखराय नमः | ॐ कपालिने नमः | |
| ॐ वामदेवाय नमः | ॐ कामारये नमः | |
| ॐ विरूपाक्षाय नमः | ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | |
| ॐ कपर्दिने नमः | ॐ गङ्गाधराय नमः | |
| ॐ नीललोहिताय नमः | ॐ ललाटाक्षाय नमः | |
| ॐ शङ्कराय नमः | ॐ कालकालाय नमः | १० |
| ॐ शूलपाणिने नमः | ॐ कृपानिधये नमः | ३० |
| ॐ खट्वाङ्गिने नमः | ॐ भीमाय नमः | |
| ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | ॐ परशुहस्ताय नमः | |
| ॐ शिपिविष्टाय नमः | ॐ मृगपाणये नमः | |
| ॐ अम्बिकानाथाय नमः | ॐ जटाधराय नमः | |
| ॐ श्रीकण्ठाय नमः | ॐ कैलासवासिने नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | ॐ कवचिने नमः | |
| ॐ भवाय नमः | ॐ कठोराय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | |

ॐ वृषाङ्गाय नमः
 ॐ वृषभारूढाय नमः ४०
 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ॐ सामप्रियाय नमः
 ॐ स्वरमयाय नमः
 ॐ त्रयीमूर्तये नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ यज्ञमयाय नमः ५०
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः
 ॐ विश्वेश्वराय नमः
 ॐ वीरभद्राय नमः
 ॐ गणनाथाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यरेतसे नमः
 ॐ दुर्धर्षाय नमः
 ॐ गिरीशाय नमः ६०
 ॐ गिरिशाय नमः

ॐ अनघाय नमः
 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः
 ॐ भर्गाय नमः
 ॐ गिरिधन्वने नमः
 ॐ गिरिप्रियाय नमः
 ॐ कृत्तिवाससे नमः
 ॐ पुरारातये नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ७०
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
 ॐ जगद्ध्यापिने नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ व्योमकेशाय नमः
 ॐ महासेनजनकाय नमः
 ॐ चारुविक्रमाय नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ भूतपतये नमः
 ॐ स्थाणवे नमः ८०
 ॐ अहये बुध्याय नमः
 ॐ दिगम्बराय नमः
 ॐ अष्टमूर्तये नमः
 ॐ अनेकात्मने नमः

| | | |
|----------------------|---------------------|-----|
| ॐ सात्त्विकाय नमः | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ खण्डपरशवे नमः | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ अजाय नमः | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ पाशविमोचकाय नमः १० | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ मृडाय नमः | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ पशुपतये नमः | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ देवाय नमः | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ महादेवाय नमः | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ अव्ययाय नमः | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ हरये नमः | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा५ उत। अनेशत्रस्येषव
आभुरस्य निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः।
धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्
विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥ नमस्ते
 अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवे॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव
 धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सर्वभूतदमनाय नमः। ()
 निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
 अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
 निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य
 इषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धैहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
 मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय
 त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकांलाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय
 मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥
 कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥रक्षा॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्धं वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्।
 इन्द्रस्तोमेन पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
 रक्षां धारयामि॥

॥नमस्काराः॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ
ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः।
महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने
नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भव नमः। शूलिने नमः।
महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
तृतीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिवतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥निशीथे॥
दुःखदारिद्र्यभारैश्च दग्धोऽहं पार्वतीपते।
त्रायस्व मां महादेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

॥पूजानिवेदनम्॥

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय नमस्ते त्रिपुरान्तक।
पूजां गृहाण देवेश यथाशक्त्युपपादिताम्॥३॥
यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुक्त्व क्षपय शङ्कर॥
शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥
इतिप्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति
ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्नग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

॥प्रधान पूजा - साम्ब-परमेश्वर पूजा (चतुर्थ-यामः)॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने
मुहूर्ते अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे
अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे
भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने
व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये ()^{३१} नाम
संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु /
स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{३२} नक्षत्र ()^{३३} नाम योग ()
करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
(त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां

^{३१}पृष्ठं २१७ पश्यताम्

^{३२}पृष्ठं २१९ पश्यताम्

^{३३}पृष्ठं २२० पश्यताम्

रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं
प्रथमयामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥आसन-पूजा॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥घण्टापूजा॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥कलशपूजा॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ
सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै
नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा भू॒तान्यापः प्रा॒णा वा आपः प॒शव॑
आपोऽन्न॒मापोऽमृत॒मापः स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः॑

स्वराडाप॒श्छन्दा॑ऽस्यापो॒ ज्योती॑ऽष्यापो॒ यजू॑ऽष्यापः॒ स॒त्यमापः॑

सर्वा॑ दे॒वता॒ आपो॒ भूर्भुवः॑ सुव॒राप॒ ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।

आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः॑ सुवो॒ भूर्भुवः॑ सुवो॒ भूर्भुवः॑ सुवः॑।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥पीठपूजा॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥गुरु ध्यानम्॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥षोडशोपचारपूजा॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने
बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।
या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव
तया नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो
नमः। आसनं समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा
शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे
भवे नाति भवे भवस्व माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा
हिंसीः पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥
अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः
सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च
सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय
नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा
अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः
शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषस्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उत्तैर्न गोपा
अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः। उत्तैर्न विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥
ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥
नमो अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अंस्यु
सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय
नमः। यज्ञोपवीताभरणानि समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्तियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा
ता भगवो वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान्
समर्पयामि॥१०॥

अ॒व॒त॒त्य॒ ध॒नु॒स्त्व॑ सह॑स्राक्ष॒ श॒ते॑षुधे। नि॒शी॒र्य॑ श॒ल्या॒नां॑ मु॒खा॑
शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। बल॑विक॒रणा॒य॒
नमः॑। पु॒ष्पैः पू॒जयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः॥

ॐ शिवाय नमः

ॐ महेश्वराय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ पिनाकिने नमः

ॐ शशिशेखराय नमः

ॐ वामदेवाय नमः

ॐ विरूपाक्षाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

ॐ नीललोहिताय नमः

ॐ शङ्कराय नमः

ॐ शूलपाणिने नमः

ॐ खट्वाङ्गिने नमः

ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
 ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॐ अम्बिकानाथाय नमः
 ॐ श्रीकण्ठाय नमः
 ॐ भक्तवत्सलाय नमः
 ॐ भवाय नमः
 ॐ शर्वाय नमः
 ॐ त्रिलोकेशाय नमः २०
 ॐ शितिकण्ठाय नमः
 ॐ शिवाप्रियाय नमः
 ॐ उग्राय नमः
 ॐ कपालिने नमः
 ॐ कामारये नमः
 ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः
 ॐ गङ्गाधराय नमः
 ॐ ललाटाक्षाय नमः
 ॐ कालकालाय नमः
 ॐ कृपानिधये नमः ३०
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ परशुहस्ताय नमः
 ॐ मृगपाणये नमः
 ॐ जटाधराय नमः
 ॐ कैलासवासिने नमः

ॐ कवचिने नमः
 ॐ कठोराय नमः
 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
 ॐ वृषाङ्गाय नमः
 ॐ वृषभारूढाय नमः ४०
 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ॐ सामप्रियाय नमः
 ॐ स्वरमयाय नमः
 ॐ त्रयीमूर्तये नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ यज्ञमयाय नमः ५०
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः
 ॐ विश्वेश्वराय नमः
 ॐ वीरभद्राय नमः
 ॐ गणनाथाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यरेतसे नमः

| | | | |
|--------------------|----|---------------------|-----|
| ॐ दुर्धर्षाय नमः | | ॐ दिगम्बराय नमः | |
| ॐ गिरीशाय नमः | ६० | ॐ अष्टमूर्तये नमः | |
| ॐ गिरिशाय नमः | | ॐ अनेकात्मने नमः | |
| ॐ अनघाय नमः | | ॐ सात्त्विकाय नमः | |
| ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | | ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | |
| ॐ भर्गाय नमः | | ॐ शाश्वताय नमः | |
| ॐ गिरिधन्वने नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ गिरिप्रियाय नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ कृत्तिवाससे नमः | | ॐ पाशविमोचकाय नमः | ९० |
| ॐ पुरारातये नमः | | ॐ मृडाय नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ पशुपतये नमः | |
| ॐ प्रमथाधिपाय नमः | ७० | ॐ देवाय नमः | |
| ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ सूक्ष्मतनवे नमः | | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ जगद्धापिने नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ व्योमकेशाय नमः | | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ महासेनजनकाय नमः | | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ चारुविक्रमाय नमः | | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ रुद्राय नमः | | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ भूतपतये नमः | | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ स्थाणवे नमः | ८० | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ अहये बुध्याय नमः | | ॐ सहस्रपदे नमः | |

ॐ अपवर्गप्रदाय नमः

ॐ तारकाय नमः

ॐ अनन्ताय नमः

ॐ परमेश्वराय नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषंव
आभुरस्य निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः।
धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्
विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्बुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते
अस्त्वायुधायानांतताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव
धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सर्वभूतदमनाय नमः। ()
निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य
इषुधिस्तवाऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।

म॒नो॒न्म॑नाय॒ नमः॑। क॒र्पूर॑ताम्बूलं॒ सम॑र्पयामि॥१५॥

नम॑स्ते अस्तु॒ भगव॑न् वि॒श्वेश्व॑राय॒ महा॑दे॒वाय॑ त्र्यम्ब॒काय॑
त्रि॒पुरा॒न्त॒काय॑ त्रि॒का॒ग्नि॒का॒लाय॑ का॒ला॒ग्नि॒रु॒द्राय॑ नी॒ल॒क॒ण्ठाय॑
मृ॒त्यु॒ञ्ज॒याय॑ स॒र्वेश्व॑राय॒ सदा॑शि॒वाय॑ श्रीम॒न्महा॑दे॒वाय॒ नमः॑॥
क॒र्पूर॑नीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥रक्षा॥

बृ॒ह॒त्सामं॑ क्ष॒त्र॒भृ॒द्वृ॒द्ध वृ॑ष्णि॒यं त्रि॒ष्टु॒भौजः॑ शु॒भि॒त॒मु॒ग्रवी॑रम्।
इ॒न्द्र॒स्तोमे॑न प॒ञ्च॒द॒शेन॒ म॒र्ध्य॑मि॒दं वा॑ते॒न स॑ग॒रेण॒ रक्ष॑॥
रक्षां॑ धारयामि॥

॥नमस्काराः॥

ॐ भ॒वाय॑ दे॒वाय॑ नमः।

ॐ श॒र्वाय॑ दे॒वाय॑ नमः।

ॐ ई॒शानाय॑ दे॒वाय॑ नमः।

ॐ प॒शुप॑तये दे॒वाय॑ नमः।

ॐ रु॒द्राय॑ दे॒वाय॑ नमः।

ॐ उ॒ग्राय॑ दे॒वाय॑ नमः।

ॐ भी॒माय॑ दे॒वाय॑ नमः।

ॐ म॒हते॑ दे॒वाय॑ नमः॥

ई॒शानः॑ स॒र्ववि॒द्याना॒मीश्व॑रः स॒र्वभू॑ता॒नां

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ
हीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः।
महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने
नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भव नमः। शूलिने नमः।
महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥
प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥अर्घ्यप्रदानम्॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥
शिवरात्रिवतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्वयि भक्तिं प्रयच्छ मे।
स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

॥पूजानिवेदनम्॥

बद्धोऽहं विविधैः पाशैः संसारभयबन्धनैः।
पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥
यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुक्त्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इतिप्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति
ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥उत्तरस्मिन् दिने पारणम्॥

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



विभाग: २

उपाङ्गा:

संवत्सर-नामानि

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
 अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च॥१॥
 ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमार्थी विक्रमो वृषः।
 चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥२॥
 सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
 नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥३॥
 हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्लवः।
 शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥४॥
 प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्।
 परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥५॥
 पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती।
 दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥६॥

- | | |
|--------------|----------------|
| १. प्रभवः | ९. युवा |
| २. विभवः | १०. धाता |
| ३. शुक्लः | ११. ईश्वरः |
| ४. प्रमोदः | १२. बहुधान्यः |
| ५. प्रजापतिः | १३. प्रमार्थी |
| ६. अङ्गिराः | १४. विक्रमः |
| ७. श्रीमुखः | १५. वृषः |
| ८. भावः | १६. चित्रभानुः |

| | |
|--------------|-----------------|
| १७. सुभानुः | ३९. विश्वावसुः |
| १८. तारणः | ४०. पराभवः |
| १९. पार्थिवः | ४१. प्लवङ्गः |
| २०. व्ययः | ४२. कीलकः |
| २१. सर्वजित् | ४३. सौम्यः |
| २२. सर्वधारी | ४४. साधारणः |
| २३. विरोधी | ४५. विरोधिकृत् |
| २४. विकृतिः | ४६. परितापी |
| २५. खरः | ४७. प्रमादी |
| २६. नन्दनः | ४८. आनन्दः |
| २७. विजयः | ४९. राक्षसः |
| २८. जयः | ५०. नलः |
| २९. मन्मथः | ५१. पिङ्गलः |
| ३०. दुर्मुखः | ५२. कालयुक्तिः |
| ३१. हेमलम्बः | ५३. सिद्धार्थी |
| ३२. विलम्बः | ५४. रौद्रः |
| ३३. विकारी | ५५. दुर्मतिः |
| ३४. शार्वरी | ५६. दुन्दुभिः |
| ३५. प्लवः | ५७. रुधिरद्वारी |
| ३६. शुभकृत् | ५८. रक्ताक्षः |
| ३७. शोभनः | ५९. क्रोधनः |
| ३८. क्रोधी | ६०. क्षयः |

नक्षत्र-नामानि

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः।

आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्रेषा मघास्तथा॥१॥

पूर्वफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः।

हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदननतरम्॥२॥

अनूराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते।

पूर्वाषाढोत्तराषाढा त्वभिजिह्ववणस्ततः॥३॥

धनिष्ठा शतताराख्य पूर्वा भाद्रपदा ततः।

उत्तरा भाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च॥४॥

- | | |
|------------------|----------------|
| १. अश्विनी | १३. हस्तः |
| २. अपभरणी | १४. चित्रा |
| ३. कृत्तिका | १५. स्वाती |
| ४. रोहिणी | १६. विशाखा |
| ५. मृगशीर्षम् | १७. अनूराधा |
| ६. आर्द्रा | १८. ज्येष्ठा |
| ७. पुनर्वसुः | १९. मूला |
| ८. पुष्यः | २०. पूर्वाषाढा |
| ९. आश्रेषा | २१. उत्तराषाढा |
| १०. मघा | २२. श्रवणम् |
| ११. पूर्वफल्गुनी | २३. श्रविष्ठा |
| १२. उत्तरफल्गुनी | २४. शतभिषक् |

२५. पूर्वप्रोष्ठपदा

२७. रेवती

२६. उत्तरप्रोष्ठपदा

योग-नामानि

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा।

अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।

वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।

सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

१. विष्कम्भः

१५. वज्रः

२. प्रीतिः

१६. सिद्धिः

३. आयुष्मान्

१७. व्यतीपातः

४. सौभाग्यम्

१८. वरीयान्

५. शोभनः

१९. परिघः

६. अतिगण्डः

२०. शिवः

७. सुकर्म

२१. सिद्धः

८. धृतिः

२२. साध्यः

९. शूलः

२३. शुभः

१०. गण्डः

२४. शुभ्रः

११. वृद्धिः

२५. ब्राह्मः

१२. ध्रुवः

२६. माहेन्द्रः

१३. व्याघातः

२७. वैधृतिः

१४. हर्षणः

